॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जनवरी, 2013 वर्ष 16, अंक 1
विक्रमी सम्वत् 2069
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 24

जीवन कल्याण का अमूल्य साधन–सत्संग

जीवन को सँभालने, सुधारने व ऊँचा उठाने के लिये सत्संग मूलाधार है। धार्मिक जीवन बनाने और जीने के लिये सत्संग औषध का काम करता है। जीवनोद्देश्य की प्राप्ति में सत्संग की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि सत्संग से जीवनबोध, सत्यबोध तथा धार्मिकता जागृत होती है। सत्संग क्या है? **'सतां हि संगः सत्संगः'**– ज्ञानी, ध्यानी, धार्मिक, सात्त्विक, पवित्र लोगों के साथ उठना-बैठना और उनके विचारों को सुनना, जीवननिर्माण करने वाली पुस्तकों का स्वाध्याय करना, पवित्र धार्मिक तीर्थों में निवास करके साधन व आत्मचिन्तन करना और अच्छे विचारों का संग करना सत्संग कहलाता है। सत्संग को तीर्थ भी कहते हैं, क्योंकि प्राप्त सत्यज्ञान संसार-सागर से पार उतार देता है। सत्संग की अनन्त महिमा है। सत्संग जीवन के लिये उतना ही जरूरी है, जिनता शरीर के लिये भोजन। प्रातःकाल का भोजन सायंकाल तक और सायंकाल का भोजन रात्रिभर शरीर को बल देता है। ऐसे ही सुबह किया हुआ सत्संग दिनभर पाप, अधर्म, झूठ, फरेब आदि से बचाए रखता है और सायंकाल का सत्संग रातभर बुरे विचारों से सँभाले रहता है। मानव सत्संग से सुधरता और कुसंग से बिगड़ता है। हम जैसा साथ करते हैं, वैसे ही बन जाते हैं। जैसी संगत वैसी रंगत। चोर का साथ करेंगे तो चोर परन्तु सदाचारी का साथ करेंगे तो धर्मात्मा बन जायेंगे।

प्रभुभक्ति और सत्संग से लाभ ही लाभ है। इसमें घाटा नहीं है। जगत् की और चीजों में लाभ तथा हानि जुड़े रहते हैं। सत्संग से जीवन निज स्वरूप में आने लगता है। स्वाध्याय व सत्संग चिन्ता-भरे अन्धकारपूर्ण जीवन में दीपक का काम करते हैं। सत्संग ऐसा दर्पण है, जिसमें अपने स्वरूप का बोध होता है और अपने दोषों, पापों और कमियों का पता चलता है। कहा जाता है कि पारस पत्थर को छूकर लोहा सोना बन जाता है। वस्तुतः सत्संग ही पारस पत्थर है। पारसस्वरूप श्रेष्ठ पुरुषों की संगति से कुमार्गगामी भी सुधर कर स्वर्ण बन जाते हैं। जहाँ अच्छे लोग रहते हैं, वहाँ स्वर्ग है। जितनी देर हम अच्छे सत्संग में रहते हैं, उतनी देर दोषों व बुराइयों से बचे रहते हैं। श्रेष्ठ सत्संग दुर्लभ माना गया है।

सत्संग जीवन को निर्मल बनाता है। सत्संग से मन के बुरे विचार व पाप हटते हैं और मन प्रभुभक्ति की ओर प्रेरित होता है। जिस प्रकार प्रतिदिन घर को साफ-सुथरा रखते हैं, ऐसे ही मन को नित्य सत्संग से पवित्र बनाने की जरूरत है। महापुरुषों और धार्मिक ग्रन्थों की कथा-वार्ता सुनने और पढ़ने से हमें पता चलता है कि हमें जीवन कैसे जीना चाहिए। उत्तम चरित्रों की कथाएँ सुनने से हमें पता चलता है कि पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-भाई, राजा-प्रजा आदि का परस्पर कैसा व्यवहार होना चाहिये। ऐसी शिक्षाएँ हमें रामायण के चरित्रों तथा अन्य महापुरुषों के जीवन से मिलते हैं। अच्छे धार्मिक ग्रन्थों के स्वाध्याय और सत्पुरुषों की शिक्षाओं को सुनने से जीवन में दैवीभाव जागृत होते हैं। रामायण कह रही है–'राम बनो। रावण बनने पर उसकी दुर्गति व विनाश देख लिया। राम की तरह जीवन जियो। जीवन को सन्मार्ग पर चलाओ। बुरे कर्मों से बचो।' रामायण सुन्दर दैनिक जीवन जीने का सन्देश देती है।

सत्संग मन के रोगों की चिकित्सा है। जब मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि वासनाओं की आँधी चलती हो और ज्ञानरूपी दीपक बुझ रहा हो, ऐसे में सत्संग से प्राप्त ज्ञान, विवेक तथा वैराग्य मनुष्य को सँभालने और पतन से बचाते हैं–

सत्संग की बहती है गंगा, तू नहाता क्यों नहीं?
भाग्य तेरा सो रहा, इसको जगाता क्यों नहीं?
फिर मत कहना कुछ कर न सके, जब नर-तन तुम्हें नीरोग मिला,
सत्संग का भी है सुयोग मिला, फिर भी भवसागर तर न सके।
फिर मत कहना कुछ कर न सके॥

सत्संग बड़े सौभाग्य से मिलता है; सबको नहीं मिलता। जिस पर प्रभु की कृपा और दया होती है, वही सत्संग की ओर प्रवृत्त होता है। मन्दिरों के सामने से हजारों लोग रोज निकलते हैं, परन्तु मन्दिरों में प्रवेश कोई-कोई भाग्यशाली ही करता है। सत्संग डाकू को सन्त और राक्षस को देवता बनाने का कार्य करता है। इससे बुराइयों से ऊपर उठने की शक्ति प्राप्त होती है। सत्संग से आदमी को अपनी भूलों का पता चलता है। सत्संग जादू का काम करता है। इससे रजोगुण व तमोगुण

1 जनवरी विदेशी नववर्ष है

(शेष पृष्ठ 21 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

DAV UNIVERSITY (JALANDHAR)

(Sponsoring Body: DAV College Trust & Management Society, New Delhi)

A Dream Fulfilled

Arya Putra

SH. PUNAM SURI

as Founder Chancellor

President, DAVCMC, New Delhi

Sh. Punam Suri`s vision rests on selfless and soulful devotion for the promotion of quality education signaling multiple significations for the whole country. He is indeed the most befitting person to be honoured with this prestigious designation. His visionary leadership may by treated as a "signifier of the excellence" which DAV fraternity as a whole represents persistently illuming and enriching the world of education.

CHANCELLOR`S VISION

DAV has been making a significant contribution to the society through spreading value-based education keeping the ancient Vedic heritage in mind. In fact, it is the only organization which has set high standards in education while maintaining a balance between Vedic wisdom and modernity.

The organization runs and manages over 750 educational institutions comprising of public schools, grants in aid schools, colleges, institutes of professional education and research institutions all over India and abroad. Recently, the organization has taken one step forward by establishing DAV University at Jalandhar, Punjab.

While DAV feels proud of its achievements, it is yet not contented. Its vision is to be crowned as the finest educational organization in the world. Its mission is man making, dispelling knowledge and building Vedic values. Their success in this endeavor has the potential of making their society free from prejudices and vices.

All the members of DAV fraternity, believe that the best way to bring a change is to initiate it. With this belief, they have continually engaged over more than 125 years in a relentless endeavor to grow and develop into a pioneer organization in the field of education.

NATURE OF DAV UNIVERSITY

UNIVERSITY IS: State Private University Established by Punjab Government Ordinance no. 06 of 2012 dated 25.10.2012 ❏ Multi disciplinary University. ❏ To Be Approved By University Grants Commission (UGC), New Delhi.

VISION OF THE UNIVERSITY

Industry integrated curricula- Curricula of all courses will be designed for its relevance to industry`s current and futuristic needs.

Research Excellence- The university will be unique in privileging research and development of international standards.

Global Perspective- The university shall aim to be a pace setter not just in the Indian context but at an international level. Its alumni will be oriented to work anywhere in the world keeping in view the Indian/Vedic ethical and Moral values.

Social Sensitivity- The University shall focus on specialized research to cater the futuristic needs of society.

(Cont. on Page 23)

दुःख भरे दिन बिते रे भईया, अब सुख आयो रे.......

धैर्य धर्म का लक्षण और मनुष्य जीवन का अत्यन्त आवश्यक गुण है, जिसके बिना सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती। धैर्य सबसे बड़ी प्रार्थना है जिससे जीवन के लक्ष्य का द्वार खुल जाता है। धैर्य ही लक्ष्य के द्वार की चाबी है।

दु:ख और सुख सिक्के के दो पहलू हैं। दु:ख आता है, सुख भी आत है। मेरे विचार से दु:ख पहले आता है उसके बाद सुख आता है। एक दर्शनिक के अनुसार दु:ख, सुख का आधार है। दु:ख नही तो सुख का अनुभव भी नहीं हो सकता। बात को और सरलता से समझने के लिए उदाहरण से समझने का प्रयत्न करें, चिलचिलाती धूप में घर के बाहर आप प्यास का अनुभव कर रहे हैं। प्यास ने पानी की उपलब्धता न होने के कारण दु:ख बढ़ा दिया। इस कष्ट को सहते आप किसी तरह घर पहुंचे और ठण्डे पानी का सेवन कर जो सुख-आनन्द आप को प्राप्त हुआ वह कभी भी न होता अगर गर्मी की प्यास से आप दु:खी/कष्ट का अनुभव ना कर रहे होते। अर्थात् दु:ख है तो ही सुख का अनुभव है। इसलिए दु:ख है तो आप समझ लीजिए की सुख आने ही वाला है तभी तो दु:ख आया है। यहां आपके धैर्य की परीक्षा है।

जीवन में कई ऐसी छोटी और साधारण बातें होती हैं जिनसे उपरोक्त बात को समझा जा सकता है। कक्षा में काले रंग के पट्ट पर ही सफेद चूने की कलम से (चौक) से लिखा जाता है। काला होने के कारण से ही सफेद चौक से लिखा नजर आता है। इस लेख को आप इसी कारण से पढ़ पा रहे हैं। क्योंकि सफेद पर काले से लिखा है। इसलिए काला/सफेद, सुख/दु:ख सभी साथ-साथ चलते हैं। यह जीवन है। केवल सुख ही हो ऐसा नहीं हो सकता। कहीं ना कहीं दु:ख अवश्य होगा। तभी तो कहते हैं "नानक दुखिया सब संसार" जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं। दु:ख ओर सुख दो पहिये पर गाड़ी चल रही है। दु:ख-सुख के बिना जीवन की कल्पना संभव नहीं।

इसे एक ओर तरह से समझते हैं। अकबर बीरबल के संवाद के बहाने कई बार जीवन को गम्भीर दर्शन भी मिलता है। किस्सा कुछ इस प्रकार से है।

अकबर ने बीरबल से पूछा की ऐसी बात बताओ जिससे दुखी व्यक्ति सुखी और सुखी व्यक्ति दुखी हो जाये।? बीरबल थोड़ी देर सोचता रहा और फिर बोला जहांपनाह "यह वक्त भी गुजर जायेगा" अकबर ने आश्चर्य से पूछा इसका क्या मतलब? बीरबल ने स्पष्ट किया कि राजन इस वाक्य से दु:खी व्यक्ति के मन में विश्वास का संचार होगा, वह सोचेगा कि चलो कुछ दिनों में सुख आने वाला है, दु:ख के दिन बीत जायेगें और अच्छे दिन आ जायेंगे। वह इसे सुनकर खुश होगा, लेकिन जो सुखी है उसे यह वाक्य सुनते ही चिन्ता होगी कि सुख भरे दिन बीत जायेंगे तो दु:ख वाले दिन आयेंगे।

क्रिकेट खिलाड़ी युवराज एक गंभीर रोग को मात देकर फिर से मैदान में उतरे। वे चाहे किसी विज्ञापन में ही बोल रहे हैं, परन्तु बात पते की है। कि जब बल्ले का ठाठ था, तब सातवें आसमान पर थे। फिर रोग ने जकड़ा तो धड़ाम से धरती पर आ गिरे। चारों ओर अंधेरा छा गया। उन्होंने आशा का आंचल छोड़ा नहीं। दु:ख, पीड़ा, दुर्बलता के उन क्षणों को धैर्य से सहा। जो उपचार हो सकता था उसे विश्वास से किया। जब बुलंदियों को छुआ था तो उसका सुख भी उन्हें ही मिला था। फिर जब यह दु:ख आया तो इसे कौन झेलता?

लेकिन आज वे फिर से उसी मकाम पर दिखाई दे रहे हैं। वक्त गुजरता ही है। समय कभी रूकता नहीं। इस संसार में कुछ भी स्थाई नहीं है। सुख-दु:ख, सफलता-असफलता, जन्म-मरण सब 'द्विनियति' की ओर संकेत करते हैं। इसीलिए विवेकी मनुष्य सुख मिलने पर पूरी तरह उपभोग करता हुआ भी अहंकारी नहीं बनता। अपने से कमतर लोगों का तिरस्कार नहीं करता। सब को साथ लेकर चलता है। अपने वैभव और ओहदे का प्रदर्शन नहीं करता। वह समाज में सब के आदर का पात्र बनता है। अपनी संपदा का भोग, मिल बांटकर करता है। वह जानता है कि सुख-सुविधा के सारे उपकरण टिकने वाले नहीं इसीलिए वह मन से सदा उनके त्याग के लिए तैयार रहता है। जब भी वह समय आएगा वह दूसरे प्रकार का जीवन जीने के लिए भी तत्पर होगा।

विवेकी मनुष्य जानता है कि दु:ख के दिन भी हमेशा नहीं रहेंगे। उन्हें भी विदा होना है। समय को बदलना ही होगा। इसलिए वे धैर्य और साहस नहीं खोते। वे हताश नहीं होते प्रयास नहीं छोड़ते। इंसान सोचने लगता है कि आज का दु:ख उसके व्यक्तित्व को जितना तराशेगा आने वाले सुख के लिए उसके अंतर में उतनी ही जगह बनेगी। वह अधिक संवेदनशील हो उठता है। कुछ लोगों को सुख के दिनों में भी यह बात अस्थिर कर देती है कि ये दिन टिकने वाले नहीं, चले ही जाएंगे। सम्पन्नता, ऐशोआराम, सामाजिक रूतबा और उपाधियां वक्त की तेज रफ्तार में पीछे छूट जाएंगी-उन्हें यह तथ्य विचलित कर देता है।

असुरक्षा की भावना इतनी तीखी हो जाती है कि वे बेतहाशा संग्रह करने लगते हैं उचित-अनुचित साधन अपनाने लगते हैं। उनका स्वभाव टीन के बर्तन की तरह हल्का होता है। तुरंत गर्म, तुरंत ठंडा। वे अच्छे दिन आने पर नाचने लगते हैं, बुरे दिन आते ही अवसाद की गहराइयों में डूबने लगते हैं। सुखी होते हुए भी उन पर दु:ख का एहसास हावी हो जाता है।

अजय टंकारावाला

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का नाद गुंजायमान हो।
विश्व के हर कोने से आर्यो का आह्वान हो।
ओ३म् की पताका लहराने को विश्व आर्य एकत्रित हो।
दयानन्द भक्तो का मेला है इसमें सब सम्मिलित हो।
वेद मन्त्रों की होगी गूँज चारों ओर।
यज्ञ की सुगंध से महकेगी साझं और भोर।
भजन और सत्संग से जीवन को नई दिशा मिल जाए।
ऋषिबोधोत्सव में अपनी उपस्थिति से इसे सफल बनायें।

अनुव्रती पुत्र

❒ नरेन्द्र आहुजा 'विवेक'

संसार में मनुष्य के रूप में जन्म लेने के उपरान्त हमारा नैतिक कर्त्तव्य बन जाता है कि हम अपने जन्मदाता माता-पिता के प्रति पूरी निष्ठा से सेवाभाव रखते हुए उनका अनुव्रती होकर अपने पुत्र धर्म का निर्वहन करें। इस सन्दर्भ में परमपिता परमेश्वर द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही समस्त प्राणियों के लिए आचार संहिता के रूप में दिये गए ईश्वरीय ज्ञान वेद में भी स्पष्ट आदेश है **अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमना।** अथर्ववेद 3/30/2 अर्थात पुत्र पिता के उद्देश्यों व्रतों के अनुकूल चलने वाला हो तथा माता के साथ प्रीति युक्त मन वाला हो। इस प्रकार पुत्र धर्म के निर्वहन के लिए पिता के व्रतों के अनुकूल चलना अनिवार्य बताया गया। वैसे भी लौकिक व्यवहार में हम अपने जीवन में अपना तनिक सा उपकार करने वाले का भी धन्यवाद विनम्रता पूर्वक करते हैं तो फिर पिता के उपकारों को हम कैसे भुला कर कृतघ्नता दोष या पाप के भागी बन सकते हैं।

लेकिन अब यहाँ एक और प्रश्न उत्पन्न होता है यदि किसी का पिता शराबी, कबाबी और अधार्मिक हो तो क्या पुत्र को अपने पिता का अनुकरण करते हुए स्वयं भी बिगड़ जाना चाहिये या फिर ऐसे समय में पिता के इस अधार्मिक आचरण के विपरीत चलना चाहिये। यहाँ इस बात को एक अन्य लौकिक उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं यदि कोई आगे चल रहा वाहन सड़क पर बने गड्डे में फँस जाता है तो हम उसकी विपरीत स्थिति देखकर अपने वाहन की दिशा को परिवर्तित कर लेते हैं। ठीक इसी प्रकार यदि किसी कुसंग में फँसकर पिता ने अपनी जीवन यात्रा को कुमार्ग के गड्डों में फंसा दिया तो उनकी इस विपरीत स्थिति से भी शिक्षा लेते हुए स्वयं का बचाव करना और अपने जीवन को सुमार्ग पर चलना ही उचित है। वैसे भी ऐसी स्थिति में पिता के नशेड़ी या कुमार्गी होने पर परिवार पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव से हमें यही शिक्षा मिलती है कि इस स्थिति में हमें पिता के कुमार्ग पथ का अनुकरण नहीं करना है।

अब प्रश्न उठता है कि इस स्थिति में वेद भगवान के आदेश अनुव्रतः पितुः पुत्रः अर्थात पिता के अनुव्रती होने का क्या होगा। इसके लिए हमें 'अनुव्रती' होने का अभिप्राय समझने के लिए इसके यौगिक अर्थ को जानना होगा। यजुर्वेद में व्रत की व्याख्या करते हुए कहा

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि।। (यजु॰ 1/5) अर्थात् हे सत्यप्रकाश स्वरूप परमात्मन् आप व्रतों के पालक एवं रक्षक हैं। मैं असत्य को छोड़कर सत्य को ग्रहण करने का व्रत लेता हूं मुझे इस व्रत को पूर्ण करने की शक्ति प्रदान करें। इस वेद मंत्र में दी गई व्रत की परिभाषा शुभ संकल्प से स्पष्ट हो जाता है कि अनुव्रतः होने का सीधा अभिप्राय यही है कि हमें अपने जीवन में पुत्र धर्म का निर्वहन करने के लिए पिता के व्रतों अर्थात शुभसंकल्पों अर्थात् असत्य त्याग कर सत्य मार्ग पर चलने का ही अनुसरण करना है। यक्ष युधिष्ठिर संवाद में युधिष्ठिर ने पिता को आकाश से भी ऊंचा बता कर पिता के महत्व को स्थापित किया है और अपने जीवन में अपने पुत्र से पराजित होने की प्रसन्नता की भव्य एवं दिव्य भावना का वर्णन पिता के लिए किया है। इससे भी स्पष्ट है कि यदि पिता कुमार्गी अधार्मिक है तो वह अपने पिता होने का दायित्व नहीं निभा रहा ऐसी स्थिति में पिता के उस कुमार्ग का अनुसरण करना पुत्र के लिए आवश्यक नहीं है। माता-पिता के लिए पृथ्वी भर की समस्त संपदाओं से भी अधिक मूल्यवान पुत्र सम्पदा है और पुत्र को पुनाति त्रायते अर्थात कुल को पवित्र करने वाला और माता-पिता की रक्षा करने वाला कहा गया।

इस बात के एक अन्य प्रकार से समझने का प्रयास करते हैं। हमारे पिता फिर पिता के पिता दादा और दादा के पिता परदादा ऐसे यह लम्बी कड़ी सृष्टि के उत्पतिकर्ता परमपिता परमेश्वर तक जाती है। अब इस लम्बी अन्तहीन सी कड़ी में बीच में किसी ने यदि अपने सच्चे पुत्र धर्म को निर्वहन नहीं किया तो यह कड़ी टूट जाती है। अब इस टूटी कड़ी को जोड़ने और अपनी वंश परम्परा को परमपिता तक पहुंचाने के लिए हमें परमपिता परमेश्वर का सच्चा अनुव्रती होना पड़ेगा। इससे लम्बी वंश परम्परा में यदि कहीं अपभ्रंश दोष आ गया है तो हम परमपिता परमेश्वर तथा उन द्वारा प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान वेद के अनुगामी होकर उस आ गए दोष को दूर कर सकते हैं। हमें इस बात की प्रेरणा मिलती है जैसे यज्ञ की अग्नि में आहुत होकर समिधा अपने अन्दर छिपी अग्नि को अग्निदेव के साथ एकरूप करते हुए अग्निस्वरूप हो जाता है ठीक उसी प्रकार इस मनुष्य जीवन में हम भी अनुव्रती होने का सच्चा अभिप्राय समझ कर अपनी आत्मा को अग्नि स्वरूप परमात्मा को समर्पित कर उनके गुणों से एकरूपता स्थापित करते हुए उन गुणों को अपने जीवन में धारण करने का शुभ संकल्प लेते हुए पिता के अनुव्रती होने के धर्म का निर्वहन कर सकते हैं। लौकिक जीवन में पिता के सभी शुभसंकल्पों संस्कारों को अपनी बुद्धि विवेक की छलनी में से छानकर उन्हें अपने जीवन में धारण करना ही पिता का अनुव्रती होना कहलाता है।

502 जी एच-27, सैक्टर-20, पंचकूला- 09467608686

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी बोधोत्सव 09, 10, 11 मार्च 2013 को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर ''टंकारा समाचार'' का 184वां अंक ऋषि बोधांक के रूप में प्रकाशित होगा।

आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 01 फरवरी 2013 तक भिजवाकर कृतार्थ करें। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग, स्वास्थ्य आदि एवं अन्य जन उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर 2000 शब्दों तक ही सीमित हों, ऐसा निर्णय किया है। यदि प्रकाशन सामग्री टाईप की हुई हो तो सुविधजनक रहेगा। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

अजय सहगल, सम्पादक, टंकारा समाचार

ए-419, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

चलभाष न. 9810035658

स्वाभाविक चेष्टाओं से पुनर्जन्म की सिद्धि

❒ महात्मा चैतन्यमुनि

जन्म और मृत्यु की पहेली जनसाधारण को ही नहीं बल्कि बुद्धिजीवियों के लिए भी सदा से ही एक विचारणीय विषय रहा है। कुछ लोगों का मानना है कि व्यक्ति संसार में पैदा होता है और मरने के बाद पूरा किस्सा ही समाप्त हो जाता है मगर कुछ का मानना है कि शरीर के मरने के बाद भी जीवात्मा का अस्तित्व बना रहता है और उसके द्वारा किए गए कर्मों के आधार पर उसका पुनर्जन्म होता है। कठोपनिषद् में एक युवक नचिकेता इसी रहस्य को यमाचार्य से जानने की जिज्ञासा करते हुए कहता है-**येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके। एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्ववयाहं वराणामेष वरस्तृतीय:॥** (कठो. उप.1-20) मनुष्य के मर जाने पर जो जिज्ञासा रहती है, कोई कहते हैं मरने पर भी मनुष्य बना रहता है, कोई कहते हैं नहीं बना रहता-आपसे शिक्षा पाकर मैं इसका समाधान जानना चाहता हूँ। मैंने जो वर मांगने हैं उनमें तीसरा वर यही है। पहले तो यमाचार्य उस नचिकेता की अनेक प्रकार की परीक्षा लेते हैं मगर बाद आगे चलकर आत्मा की अमरता का सन्देश देते हुए कहते हैं-**न जायते म्रियते वा विपचिश्न्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्। अजो नित्य: शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥** (कठो. उप. 2-18) यह चेतन जीव न उत्पन्न होता है, न मरता है, न यह किसी कारण से उत्पन्न हुआ है, न पहले कभी हुआ था। यह अजन्मा है, नित्य है, निरन्तर है, पुरातन है-शरीर के मरने पर भी यह नहीं मरता।

साधारण व्यक्ति के मन में यह बात उतरती नहीं है क्योंकि भले ही वेद, उपनिषद् तथा गीता आदि ग्रन्थों में आत्मा को अजन्मा और अनादि कहा गया है मगर लोगों का कहना है कि वे व्यक्ति का जन्म और मृत्यु होते हुए प्रतिदिन देखते हैं इसलिए जन्म-मृत्यु की पहेली तो फिर भी बनी ही रहती है। वास्तवकिता यह है कि आत्मा को अजर व अमर ही है मगर जन्म और मृत्यु हमारे शरीर की होती है। आत्मा के संयोग से शरीर का जन्म और वियोग से शरीर की मृत्यु होती है इस प्रकार शरीर का ही निर्माण होता है और नाश भी शरीर का ही होता है। हम कह सकते हैं कि 'जिसमें किसी शरीर के साथ संयुक्त होके जीव कर्म करने में समर्थ होता है, उसे 'जन्म' कहते हैं और 'जिस शरीर को प्राप्त होकर जीव क्रिया करता है, उस शरीर और जीव का किसी काल में जो वियोग हो जाना है उसको 'मरण' कहते हैं।'

वेदादि सत्य शास्त्रों में पुनर्जन्म की बात को स्वीकारा है अत: इस व्यवस्था के न मानने वाले नास्तिक कहे जायेंगे। क्योंकि मनु जी ने कहा है-**नास्तिको वेद निन्दक:** अर्थात् वेद को न मानने वाले नास्तिक हैं। पाणिनि के अनुसार-'जिस विषय में किसी व्यक्ति का विचार उस विषय को स्वीकार करने में है, तो उस विषय की दृष्टि से वह आस्तिक कहा जाऐगा। यदि व्यक्ति का विचार विषय को अस्वीकार करने में है तो वह नास्तिक होगा। उनका कथन है-**अस्ति मतिरस्य, आस्तिक:। नास्ति मतिरस्य नास्तिक:। न च मतिसत्तामात्रे प्रत्यय इष्यते, किं तर्हि परलोकोऽस्तीति यस्य मतिरस्ति स आस्तिक:। तद्विपरीतो नास्तिक:।** अर्थात् जो परलोक अर्थात् पुनर्जन्म को स्वीकार करता है, वह आस्तिक तथा जो ऐसा नहीं मानता वह नास्तिक है। इस अर्थ को ऐसे भी कहा जा सकता है-जो आत्मा को देह आदि के अतिरिक्त मानकर नित्य सदा विद्यमान रहने वाला स्वीकार करता है वह आस्तिक तथा जो ऐसा नहीं मानता, वह नास्तिक है। अब विचारणीय यह है कि जब आत्मा का देह से अतिरिक्त अलग अस्तित्व है तो देह के छूट जाने के बाद उस आत्मा का क्या होता है? अन्तत: यही बात स्वीकार करनी होगी कि जन्म भी शरीर का होता है और मृत्यु भी शरीर की ही होती है अत: आत्मा अपने कर्मों के अनुसार अनेक गतियों को प्राप्त होता रहता है तथा इसे ही आवागमन या पुनर्जन्म कहा जाता है। यहाँ यह बात भी मनन करने योग्य है कि पुनर्जन्म आत्मा का नहीं होता बल्कि कर्मानुसार उस आत्मा को अन्य-अन्य शरीर मिलते रहते हैं...

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी आत्मा को अमर मानना जरूरी बन जाता है क्योंकि वैज्ञानिकों द्वारा 'ऊर्जा-संरक्षण' सिद्धान्त के आधार पर इस बात को सिद्ध किया जा चुका है कि किसी भी वस्तु का कभी नाश नहीं होता है बल्कि वह अपना स्वरूप बदलती है। कपड़ा भले ही घिस-घिसकर धूल बन जाएगा मगर पदार्थ उतने का उतना ही रहेगा, वह नष्ट नहीं होगा। यदि वैज्ञानिक भौतिक जगत् में इस सिद्धान्त को सत्य मानते हैं तो आध्यात्मिक जगत् में भी इस सिद्धान्त को सत्य माना जाना चाहिए और इस सिद्धान्त के अनुसार-आत्मा उत्पन्न नहीं होता और वर्तमान में उसकी सत्ता है तो आगे यह अपना रूप ही बदल सकता है कभी नष्ट नहीं हो सकता। आत्मा का शरीर से अलग अस्तित्व है तथा शरीर के पैदा होने से पूर्व और मरने के बाद भी इसका अस्तित्व बना रहता है। अत: इस बात को स्वीकार करना ही पड़ेगा कि यह कहीं से आता है और कहीं को चला जाता है। इसे ही इसका रूप बदलना कहा जा सकता है और यही पुनर्जन्म है...

पुनर्जन्म के पक्ष में अनेक हेतु दिए जा सकते हैं जैसे आत्मा नित्य है इसलिए उसका नाश नहीं हो सकता। वेद, उपनिषद्, मनुस्मृति, दर्शन, गीता आदि ग्रन्थ इस बात का अनुमोदन करते हैं। कर्मफल-व्यवस्था के आधार पर भी पुनर्जन्म सिद्ध होता है। परमात्मा की न्याय-व्यवस्था और शक्तिमता से भी पुनर्जन्म की पुष्टि होती है। जीव की क्रमिक उन्नति का आधार भी पुनर्जन्म सिद्ध होता है। परमात्मा की न्याय-व्यवस्था और शक्तिमता से भी पुनर्जन्म की पुष्टि होती है। जीव की क्रमिक उन्नति का आधार भी पुनर्जन्म ही है। नवजात शिशुओं में जो स्वाभाविक क्रियाएं आदि होती हैं वह भी गत जन्म के संस्कारों के कारण ही हुआ करती है। स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी 'मुक्ति और पुनर्जन्म' पुस्तक में लिखते हैं-**प्रत्याहाराभ्यासकृतात् स्तन्याभिलाषात्।** अर्थात् मरने के बाद (पूर्वजन्म के) आहार के अभ्यास के कारण (जातमात्र बालक को) स्तन्य की अभिलाषा से। जीव के शरीर की चेष्टा होने से पूर्व प्रथम प्रत्यक्ष होता है, फिर आत्मा पर संस्कार होता है। तदनन्तर स्मृति होती है। स्मृति होने से किसी कार्य में प्रवृत्ति निवृत्ति होती है। माता के उदर से बाहर आते ही बालक श्वास लेने या रोने लगता है। माता का स्तन खींचकर दूध पीने लगता है। पूर्व संस्कारों के बिना यह प्रवृत्ति कहाँ से आई? उसे कब कौन बता गया कि दूध कहाँ है और कैसे मुंह चला कर पिया जाता है। उसे दूध पीते देखकर यही आभास होता है कि वह सारी प्रक्रिया से भली-भान्ति पहले से परिचित है। पेट भरने पर स्तन को स्वयं छोड़कर अलग हो जाता है। यह निवृत्ति भाव भी कहाँ से आया? एक दिन के बालक को जिसने अभी अच्छी तरह आंखें भी नहीं खोली माता किसी भी प्रकार की शिक्षा देने में असमर्थ है। स्पष्ट है कि बालक के भीतर स्थित

आत्मा को पहले की ही कुछ स्मृति है। उसी के सहारे वह अपना काम चला रहा है। इस जन्म में जिसने अभी आहार का अभ्यास नहीं किया उस जातमात्र बालक का भूख से पीड़ित होने पर आहार के अभ्यास और उसके स्मरण के बिना स्तन्यपान की अभिलाषा को हाथ पैर मार कर और रो-रोकर प्रकट करना सम्भव नहीं हो सकता। पूर्व देह में रहते हुए आत्मा के तद्विषयक अभ्यास और उसकी स्मृति ही बालक की इस प्रवृत्ति में कारण है।

बालक के जन्म लेने के अनन्तर उसके व्यवहार में पहले कुछ सप्ताहों में कुछ ऐसी विचित्रता दिखाई देती है जो उसके बड़े हो जाने पर नहीं रहती। सोते-सोते बालक कभी मुस्कराने लगता है, कभी दु:खी सा होकर मुंह बनाने लगता है और कभी डर के मारे कांप उठता या चीख पड़ता है। स्वप्नावस्था में किसी स्मृति के कारण ही ऐसा होता है। बिना किसी वस्तु को देखे या अनुभव किए उसकी स्मृति नहीं हो सकती। स्वप्नावस्था में भी वही देखा या सुना व अनुभव किया जाता है जो पहले कभी जागृतावस्था में देखा, सुना या अनुभव किया होता है। इस जन्म में अभी तक बालक ने सुख, दु:ख या भय के कारणों को अनुभव ही नहीं किया। बाह्य जगत् में अभी उसका इन्द्रियार्थसन्निकर्ष आरम्भ नहीं हुआ। ऐसी अवस्था में पूर्वजन्म के अभ्यास की स्मृति के सिवाय सद्योजात बालक की हर्ष, शोक, अथवा भय की अभिव्यक्ति का और कोई कारण नहीं हो सकता।

कृमि से लेकर मनुष्य पर्यन्त सभी प्राणी मृत्यु से डरते हैं। जिस प्रकार अत्यन्त मूढ़ में यह क्लेश रहता है, उसी प्रकार शास्त्रज्ञ विद्वान् में भी देखा जाता है। कुशल और अकुशल दोनों में ही यह भावना समान रूप से एवं सहज भाव से रहती है। कोई विषय पहले अनुभूत होने पर ही बाद में उसकी स्मृति को सकती है। अनुभव होने पर वह विषय चित्त में आहित रहता है और उसका पुन: बोध ही स्मृति होती है। मरण भय आदि की स्मृति देखी जाती है। इस जन्म में मरण भय अनुभूत हुआ नहीं है। यदि वह पूर्वजन्म में अनुभव न हुआ होता तो उसका संस्कार संचित न होता। जिसने पहले कभी मरणत्रास का अनुभव न किया हो वह 'मैं मरूं नहीं, मैं जीवित रहूँ' ऐसी इच्छा नहीं कर सकता। इस प्रकार अमर होने पर भी मरणत्रास से अभिभूत होने से आत्मा के पूर्वजन्म का होना सिद्ध होता है। **'मृत्योर्माऽमृतं गमय।'** (मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो), **'यस्य च्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः।'** (जिसकी छाया-आश्रय में अमरता है, अन्यथा मृत्यु), **'तमेव विदित्वाऽति मृत्युमेति।'** (उसे जानकर ही मृत्यु पर विजय प्राप्त की जा सकती है) तथा **'मृत्युं तीर्त्वाऽमृतमश्नुते।'** (मृत्यु को पार करके अमरत्व की प्राप्ति) आदि श्रुति वचनों से सहज ही पुनर्जन्म की भी सिद्धि होती है। 'हेयं दु:खामनागतम्।' (यो.द.2-16) अनागत-भविष्यत् दु:ख त्याज्य होता है। भूत, दु:ख भोग से निवृत्त हो चुका है और वर्तमान दु:ख भोगारूढ़ होने से समय पाकर स्वयं निवृत्त हो जायेगा। इसलिए विचारशील मनुष्य आने वाले दु:ख की निवृत्ति के लिए ही प्रयत्न करता है। इस जन्म में तो मृत्यु निश्चित है। अत: उससे बचने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता। निश्चय ही इसके बाद होने वाली किसी और मृत्यु से भयभीत होकर उससे बचने के लिए मनुष्य पुरूषार्थ करता है। दूसरी मृत्यु तभी होगी जब पहले दूसरा जन्म होगा इस जन्म में होने वाली मृत्यु के अनन्तर मोक्ष तो किसी-किसी को ही मिलेगा। अधि संख्य आत्माएं तो आवागमन अर्थात् बार-बार जन्म और बार-बार मृत्यु के चंगुल में फंसी रहेंगी। इसी से बचने के लिए यह अमरता अथवा मुक्ति के लिए लालायित है। इस प्रकार मरणत्रास से जैसे पूर्वजन्म की सिद्धि होती है वैसे ही पुनर्जन्म की भी।

इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के वचन हमने पहले भी उद्धृत किए हैं (ऋ.भा.भूमिका पुनर्जन्म विषय) जिनका सार इस प्रकार है कि योगशास्त्र में भी पुनर्जन्म का विधान किया है-हर एक प्राणियों की यह इच्छा नित्य देखने में आती है कि भूयासमिति अर्थात् मैं सदैव सुखी बना रहूं, मरूं नहीं। यह इच्छा कोई भी नहीं करता कि मा न भूयं अर्थात् मैं न होऊं। ऐसी इच्छा पूर्वजन्म के अभाव से कभी नहीं हो सकती। यह 'अभिनिवेश' क्लेश कहलाता है, जो कि कृमिपर्यन्त को भी मरण का भय बराबर होता है। यह व्यवहार पूर्वजन्म की सिद्धि के जानता है।

-महादेव, सुन्दरनगर-174401, हि.प्र.

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय लिया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

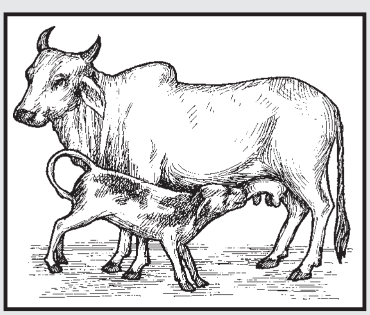

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 15000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि ***श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,*** के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) | **शिवराजवती आर्या** उप-प्रधाना | **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

माँ का प्रशिक्षण और कर्त्तव्य बोध

❐ श्रीमती शन्नादेवी

अध्यापक, अभियन्ता, चिकित्सक, अभिनेता, संगीतज्ञ, नर्तक, प्रबन्धक सब के लिए योग्य प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। उन्हें विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय पर्यन्त कई प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाता है। उन्नत हवाई जहाज, टेलिवीजन, कंप्यूटर तथा गाय, घोडा, आम, गेहूँ आदि के विकास हेतु अनुसन्धान किया जाता है। भौतिक योजनायें मनुष्य को आवश्यक हैं, परन्तु जिस मनुष्य के लिये ये सब अभिप्रेत है, उस मनुष्य को श्रेष्ठ बनाने के लिए योजना नहीं बनाई जाती। भगवती वेदमाता ने उदघोष किया है- **"मनुर्भव जनया दैव्य जनम्"**- 'तुम सब आकृति के साथ मनुष्य की प्रकृति को भी अपनाओ। उत्तम मनुष्य हो कर देवताओं को जन्म दो।' कोई जड पदार्थ अथवा मनुष्येतर जीव देवों को पैदा नहीं कर सकता।

संसार के सब मनुष्य माताओं से ही जन्म लेते है। यह कार्य पुरुष के सामर्थ्य से बाहर है। नारी ही सन्तानों की जननी, पोषिका और पालिका है। प्रशिक्षण केन्द्रों में इन्जीनियर, चिकित्सक, प्रबन्धक प्रशिक्षित किये जाते हैं। परन्तु सदाचार, शिष्टाचार और नैतिकता की शिक्षा का एकमात्र प्रशिक्षण केन्द्र माँ है। कहा गया है-**"प्रशस्ता धार्मिकी माता विद्यते यः सः मातृमान्।"** गर्भावस्था से लेकर शिक्षा समाप्ति पर्यन्त जो सन्तान माता से निर्मित होती है, वह मातृमान् है। जन्म देने से जननी बन सकती है, परन्तु प्रारम्भिक काल में नैतिक ओर आध्यात्मिक शिक्षादात्री ही माता है। आधुनिक युग में मातृशिक्षा के अभाव से चारों दिशाओं में भ्रष्ट राजनेता, भ्रष्ट सन्यासी, भ्रष्ट न्यायाधीश, भ्रष्ट व्यवसायी, कृषक, सैनिक भर गये हैं। महिलायें मोहग्रस्त और विलासी हो जाने से सन्तानों का मार्गदर्शन करने मे असमर्थ हैं। माँ बनने का प्रशिक्षण विस्मृत-सा हुआ है। **"माता निर्माता भवति"**-यह उक्ति कहीं सुनाई नहीं देती है।

एक बार अमेरिका में स्वामी विवेकानन्द से एक देवी ने निवेदन किया-'स्वामीजी, मैं अपने पुत्र को विवेकानन्द बनाना चाहती हूँ। उसको किस विश्वविद्यालय में प्रविष्ट कराऊँ? स्वामीजी ने हँस कर उत्तर दिया-'बहन जी! गर्भधारिणी जन्मदात्री माँ की तपस्या से साधु और सदाचारी सन्तान जन्म लेते हैं। इसलिये वह विश्वविद्यालय आप स्वयं हैं।

वैदिक ऋचा में मातृत्व की महिमा प्रतिध्वनित होती है-

अम्बितमे नदीतमे देवीतमे सरस्वती। अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि।। (ऋ.वे. 2.41.16)

हे विदुषी माँ। आप उत्कृष्ट अध्यापिका, उपदेशिका और निर्देशिका हैं। हे माँ! हमारे जीवन-पथ को विस्तारित करो। पिता और अध्यापक सन्तानों को शिक्षा देने के पूर्व माँ उनके वर्णोच्चारण और शिष्टाचार की शिक्षा देकर विद्यादात्री की भूमिका प्रस्तुत करती है। शैशवावस्था में माता के अमृत उपदेश से सन्तान जीवन भर प्रभावित रहती हैं। माँ की भाषा उनकी मातृभाषा बनती है। माँ की वाणी उनके लिये महौषधि और अक्षयनिधि है। अमेरिका के प्रथम और यशस्वी राष्ट्रपति जार्ज वाशिंटन ने एक आम सभा में कहा था-'आज मैं जो कुछ भी हूँ, उस का श्रेय मेरी मां को है। मृत्युशय्या में उन्होंने मुझे उपदेश दिया था कि मैं जीवन-भर नशा सेवन न करुँ। उस समय मेरी आयु पंद्रह साल की थी। माँ के उपदेश का मैंने जीवन भर पालन किया।' फ्रान्स के शासक नेपोलियन के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने देशवासियों से पूछा था-"देश के लिये एक सौ सुशिक्षित नारी प्रदान करो, मैं देश का कायाकल्प कर दूँगा।" आदर्श मातृशक्ति ही देश को समृद्धि दे सकती है।

नारी राष्ट्र-यज्ञ की संयोजिका है-**"स्त्री ही ब्रह्मा वभूविथ"** (अथर्ववेद) कर्त्तव्यनिष्ठ, सदाचारी नागरिक नारी की तप ओर साधना का फल है। यक्ष के प्रश्न के उत्तर में युधिष्ठिर ने कहा था-**"माता गुरुतरा भूमेः"**-माँ भूमि से भी अधिक वंदनीया है। पिता की मृत्यु के बाद माता ही पिता का स्थान ले सकती है परन्तु पिता कभी माता के बाद उसका कर्त्तव्य नहीं निभा सकता। यही कारण है कि महर्षि मनु ने उद्घोष किया है-

उपाध्यायात् दशाचार्यः आचार्याणां शतं पिता। पितृदशशतं माता गौरवेण अतिरिच्यते।।

-एक आचार्य दस अध्यापक के समान, सौ आचार्य पिता के समान और सहस्त्र पिता एक माता के समान समझना चाहिए।

मदालसा गर्भावस्था में गाया करती थी-**"शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि संसार माया परिवर्जितोऽसि"**-'रे गर्भस्थ पुत्र तू शुद्ध है, तु बुद्ध है, संसार-माया से मुक्त है। इन संस्कारों के कारण तीन संतान त्यागी, संन्यासी बन गये पति ने जब कहा कि इस प्रकार वंश कैसे चलेगा? तब चतुर्थ सन्तान अन्य संस्कारों के कारण सर्वगुण सम्पन्न क्षत्रिय हुआ।

राजा उत्तानपाद किसी कारणवश अपनी सन्तान ध्रुव को अपने गोद से अलग कर दिया। रोते हुई पुत्र माता सुनीता के पास गया। माता ने कहा, पुत्र! तुम पितृस्नेह से वंचित हो गये। कोई बात नहीं अब तुम असली पिता, हम सबके परमपिता प्रभु के आश्रय में रहो। जीवन भर सुख-आनन्द पाओगे। माता का उपदेश पालन करके ध्रुव इतिहास में अमर हो गया। माता शकुन्तला ने पुत्र भरत को साहसी, वीर बनाने के लिये बाल्यकाल से जंगल के भयानक पशुओं के साथ युद्ध करने को कहा। कालान्तर में भरत प्रसिद्ध क्षत्रिय बने। नेपोलियन

जीवन की आधार शिला-संस्कार

विचार हों या व्यवहार,
सब का आधार है संस्कार
चरित्र का निर्माण मनुष्यता की पहचान,
संस्कारों का ही है वरदान
पूर्व जन्मों से प्राप्त होते हैं,
परिवारजनों से भी मिलते हैं
संस्कारों का मोल महत्व हम जानें,
संस्कारों का अमिट प्रभाव पहचानें
गर्भाधान से देहावसान तक,
जीवन पथ के हर मोड़ पर
हमारा आचरण हो मर्यादित,
सुसंस्कारों की ज्योति से आलोकित
हम सब यह पावन दायित्व निभाएं,
नई पीढ़ी को संस्कारवान बनाएं
उच्छृंखलता उद्दण्डता से उन्हें बचाएं,
समाज की नींव सुदृढ़ बनाएं

-ओमप्रकाश बजाज
बी-2 गगन विहार, गुप्तेश्वर,
जबलपुर-482001, म.प्र.

जब गर्भस्थ थे, उनकी माता सेना शिविर में जाकर परेड देखती थी। उस समय उसका रोम-रोम राष्ट्ररक्षा के लिये हर्षित होता था। गर्भावस्था में प्राप्त संस्कार ने नेपोलियन को एक महान योद्धा बनाया। माता सुभद्रा ने वीर अभिमन्यु को, माता जीजाबाई ने वीर शिवाजी का जीवन निर्माण किया था।

गर्भाधान और गर्भधारण की अवस्था में माता एक पवित्र यज्ञ की विदुषी होता रहती है। गर्भाधान के समय माँ जैसी संतान पाने की इच्छा रखती है- **"तन्मना बीज गृह्णीयात्"**- तन्मय होकर बीज ग्रहण करती है। माँ के पेट में जो सन्तान है, उसका दो दिशाओं में निर्माण होता है-शारीरिक विकास और मानसिक विकास दोनों विकास हेतु क्रमशः 'पुंसवन संस्कार' और 'सीमन्तोन्नयन संस्कार' का विधान है। जब तक सन्तान मां के गर्भ में है, तब तक उसके शरीर और मन को अपनी इच्छानुसार ढाला जा सकता है। जो माताएं सन्तान के जन्म के बाद उसके बिगड़ जाने को देख कर रोया करती है, उन्हें समझ होना चाहिये कि यह कष्ट उन्हें इसलिये झेलना पड़ता है क्योंकि जिस समय बच्चे को ढालने का था, उन्होंने उसको खो दिया।

गर्भस्थ शिशु कण्ठ स्वर को भी पहचान सकता है, इसका परीक्षण अमेरिका, यूरोप, चीन आदि देशों के मनोवैज्ञानिकों और चिकित्सकों ने किया है। गर्भावस्था के शेष काल में साठ महिलाओं पर परीक्षण किया गया। आडियो टेप द्वारा तीस महिलाओं को अपनी माता का कण्ठस्वर और तीस को दूसरी महिला का कण्ठस्वर सुनाया गया। अपने माता का स्वर सुनते समय गर्भ का स्पन्दन बढ़ गया। अपरिचित महिला के बोलते समय स्पन्दन घट गया।

कुम्हार कच्ची मिट्टी में घड़ा आदि बनाते समय इच्छानुसार पदार्थ प्रस्तुत करता है। मिट्टी सूख जाने से उसमें क्षमता नहीं रहती। उस प्रकार गर्भावस्था और जन्म लेने के बाद पाँच-सात साल तक शिशु का शरीर-तत्व और मनस्तत्व माता की साधना के आश्रय में रहता है।

प्राचीन समाजशास्त्रियों और शिक्षाविदों ने सूक्ष्म दृष्टि से मातृत्व की महत्ता को समझा था। उन्होंने तदनुसार नारीशिक्षा की दिशा निर्धारण किया था। परिणामस्वरूप दीर्घजीवी, बलवान और विद्वान संतति उत्पन्न होने के साथ समाज का चहुँमुखी विकास सम्भव हुआ था।

ईशावास्यम्, 139, शहीदनगर, भुवनेश्वर (ओडिशा)

सम्मान किसका

❒ सतीश चन्द्र आर्य

एक नगर में एक सेठ जी रहते थे। उनके पास अपार सम्पदा थी। दिन रात वह अपनी सम्पदा को बढ़ाने के चक्कर मे फंसे रहते थे। वह अत्यन्त लोभी प्रकृति के थे। वह धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों के लिये कभी भी दान नहीं देते थे। हाँ, नगर में जब भी कोई संत महात्मा प्रवचन करने आते थे तो वह उनके प्रवचन सुनने तो जाते थे परन्तु पीछे ही बैठ जाते थे। उनकी अति कंजूस प्रवृति के कारण न तो कभी किसी न उन्हें आगे बैठने को कहा और न ही उन्हें कभी सम्मानित स्थान प्राप्त हुआ।

एक दिन की बात है कि किसी विद्वान के प्रवचन सुनकर न जाने कैसे उन्होंने एक बड़ी राशि दान में दे दी। दूसरे दिन जब वह प्रवचन सुनने के लिये आये तो उनके प्रति लोगों का व्यवहार एकदम बदला हुआ था। पदाधिकारी गण उन्हें स्वयं सम्मान के साथ आगे ले गये और उन्होंने उन्हें विशिष्ट जनों के साथ बैठने को स्थान दिया। पदाधिकारियों द्वारा उन को मंच पर उद्बोधन करने के लिए भी आमन्त्रित किया गया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि मुझे यह मान-सम्मान मेरे धनवान होने के कारण ही मिला है और मेरे पास धन होने के कारण ही मुझे विशिष्ठ एवं उच्च स्थान पर आगे बिठाया गया है।

इसके उपरान्त जब मुनि महाराज जी ने प्रवचन आरम्भ किया तो उन्होंने उनकी और संकेत करते हुये कहा यह तुम्हारा भ्रम है कि तुम्हें यह मान-सम्मान आपके धनवान होने के कारण मिला है। धन तो आपके पास पहले भी था जब तुम पीछे वाले स्थान पर बैठा करते थे, तुम्हें कोई पूछता भी नहीं था। धन वाले आप आज भी हो, परन्तु आज जो सम्मान आपको मिला है वह इस कारण मिला है कि आप ने धन का त्याग किया है। यह सम्मान तुम्हारे पैसे का न होकर तुम्हारे त्याग का है। आपके त्याग को ही सम्मानित किया गया है।

उपरोक्त घटना से हमें शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये कि हम सभी विनम्र और विनीत भाव अपने आप में उत्पन्न करें हम जन कल्याण हेतु यथा शक्ति दान दिया करें। दान देने की भावना हमें त्याग करना सिखाती है। त्याग करने से मानव का समाज में सम्मान होता है। केवल सम्मान होता ही नहीं, अपितु बढ़ता ही चला जाता है। सम्मान प्राप्त होने से मानव आनन्दित अनुभव करता है। हाँ, सम्मान ज्यों ज्यों बढ़ता है, त्यों त्यों मानव अहंकार के पाँव पसारने लगता है। इस बात की ओर विशेष ध्यान देना आवश्यक है कि हम में अंहकार उत्पन्न न हो। जहाँ तक हो सके हम अंहकार से बचें। अहंकार को वश में करना अथवा इससे पीछा छुड़ाना अति ही कठिन है परन्तु असम्भव नहीं। अहंकार से पीछे छुड़ाने के लिये भी त्याग की अति आवश्यकता है, हमारा ऐसा प्रयास होना चाहिये।

फाजिलका, बी-774, आर्य नगर, फाजिलका-152123

टंकारा समाचार **के प्रसार में सहयोग दें**

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

अग्नि

❑ टी.एस.के. कन्नन

वेदों में अग्नि देवता को सर्वप्रथम स्थान प्रदान किया गया है क्योंकि अग्नि ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है, ज्ञान की प्रमुखता के कारण ही ऋग्वेद के आठ मण्डलों का प्रारम्भ भी अग्नि से किया गया है। अग्नि हमारी पृथिवी एवं सौर जगत् का एक महत्वपूर्ण अंग है। विश्व के समस्त चराचर प्राणी वनस्पतियां प्रकृति के विभिन्न घटक इससे प्रभावित हैं, क्योंकि अग्नि पृथिवी का स्थानीय देव है। अग्नि का अस्तित्व हमारे प्रतिक्षण के व्यवहार में आसीन है। उसी की ऊष्मा प्रकाश एवं प्राणशक्ति पृथिवी मण्डल के विभिन्न अंगों एवं उसके निवासियों को सत्ता एवं स्थायित्व प्रदान करती है विश्व का प्रत्येक प्राणी विशेषत: मानव अपने सभी कार्य अग्नि द्वारा ही सम्पन्न करता है। अग्नि हमारे अन्दर एवं बाहर बैठे हुये हमारी रक्षा कर रहा है।

अग्नि हमारे प्राण का, हमारी मेधा का हमारे सौन्दर्य बोध का, हमारी मंगल प्रवृत्ति का अर्थात् हमारी श्रेष्ठता का मूल कारण है, मूल अंग है। अग्नि मानव जाति के भौतिक विकास के लिए एक अविच्छिन्न सहायिका रही है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विशेष उपलब्धियां सुलभ करने में अग्नि का सर्वाधिक महत्व है। अत: आभिचारिक अनुष्ठानों में अग्नि अनुष्ठान सर्वाधिक प्राचीन और विख्यात है।

वेदों में कहा गया है कि:

'अग्नि देवानामभवत् पुरोगा:' अग्नि देवों का अग्रणी है।

'अग्नि पृथिव्या वशी' अग्नि पृथिवी का स्वामी है।

'पुष्टि र्या ते मनुष्येषु पप्रथेऽग्ने' अग्नि का तीव्र एवं तेज तत्व सभी मनुष्यों में व्याप्त है। अग्नि के प्रति तादात्म्य उसके प्रति समर्पण, उसके साथ प्रीति, और उसके प्रति कृतज्ञता के भाव से अग्नि की अर्चना पद्धति शुरू हुई क्योंकि **'पावकस्य महिमा स गणयते कक्षज्ज्वलति सागरेऽपि य:'** (रघुवंश) आग का महत्व तो इतना ज्यादा है कि वह समुद्र में घास की तरह जलती है। उपनिषद्कार ने एक पंक्ति लिखी **'तेजो वाद्भ्यो: भूय:'** तेज (अग्नि) जल की अपेक्षा उत्कृष्ट है।

अग्नि हमें चेताती है कि विश्व में ग्रहण ही नहीं, त्याग भी करना सीखो। ऊर्ध्वतम उद्देश्य के प्रति गमन करो। अग्नि प्रतिपल हमें सचेत करती है कि जीवन में सदा गतिशील रहो। तेज रहो, अपने ध्येय के प्रति सर्वदा प्रयत्नशील रहो, प्रकाशमान रहो, अग्नि कभी भी अपने इन तत्वों का परित्याग नहीं करती है।

'भद्रं भवाति न पुर:' सामाजिक जीवन में अग्नि ही कल्याण एवं मंगल के लिये सबके आगे रहती है। **"अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यंसद् विश्वं न्यत्रिणम्"** (साम वेद 22) अग्नि अपनी प्रचण्ड ऊष्मा से सभी कीटाणुओं को नष्ट करती है क्योंकि अग्नि ही प्रत्येक के जीवन को स्वच्छ करने के लिये उसके मल, अन्धकार को दूर करने के लिए शक्ति एवं आनन्द देने के लिये अत्यन्त आवश्यक देव है। अग्नि की सहायता के बिना हमारा काम नहीं चल सकता है। अत: हम प्रतिपल चाहते हैं कि अग्नि के गुणों का प्रकाश हमें प्राप्त हो। फिर अग्नि तो ईश्वर की अद्भुत शक्ति का एक अंग है, एक क्षेत्र है। अत: अग्नि सर्वदा अपनी समस्त गतिद्वारा क्रिया द्वारा हमें क्रियाशील होने के लिये प्रेरित करती है।

हमारे दैनिक जीवन में अग्नि सदा रहे। अत: अग्नि से प्रार्थना करनी पड़ती है 'दया करके तुम प्रज्वलित हो जाओ। अग्नि हमारे जीवन की एक सर्वत्र प्रक्रिया है अग्नि का हम प्रतिक्षण प्रयोग करते हैं जिससे हमारे प्रयोजन सिद्ध होते हैं।' **'यस्येदं प्रदिशि यत् विरोचते'** विश्व में जो कुछ भी सम्पन्न एवं प्रकाशित हो रहा है वह अग्नि के निर्देशन से हो रहा है। वेद ऋषि कहता है कि–**'त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हित:'** हे अग्नि तुम यज्ञ के अधिपति हो। तथा सभी के हितकारी हो। अग्नि का धर्म ऊर्ध्वारोहण है। अग्नि गति करता है, उसकी ज्वाला सर्वदा ऊपर उठती है। जल की भांति नीचे नहीं जाती है। अग्नि का तो यही स्वभाव है।

हमारे तत्वदर्शी ऋषियों ने भी अग्नि की ब्रह्म ऊर्जा के रूप में साम्यता निरुपित की है अर्थात् ऋषि उस सर्वव्यापी चैतन्य की ओर संकेत करता है अग्नि जिसका प्रधान प्रतिनिधि है। ऋग्वेद का प्रथम मंत्र ही अग्नि के बारे में है। उसका देवता भी अग्नि है।

ओ३म् अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतारं रत्न धातमम्।

हे अग्नि देव। तुम सर्व व्यापक हो, ऋत्विज हो अर्थात् मंगल कार्यो के कर्ता हो, तुम्हीं होता हो हम तुम्हारी स्तुति करते हैं, क्योंकि तुम अपने याजकों को पवित्रतम ज्ञान प्रदान करते हो, विश्व में ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां पर अग्नि का अस्तित्व न हो, तथा ऐसा कोई पदार्थ भी नहीं है जो अग्नि विहीन हो, अग्नि के अस्तित्व का अन्त नहीं होता है। वह व्यक्त, अव्यक्त रूप में सर्वत्र विद्यमान है अग्नि ही प्रथमत: देवता है यह ईश्वरीय शक्ति का प्रथम रूप है। दैनिक जीवन में सुविधा सुख के आदान प्रदान करने में अग्नि स्थूलरूपेण स्थित है उसकी उपयोगिता ही प्रभु प्रदत्त वर है। अत: अग्नि में जो भी तपता है वह स्वर्णिम हो जाता है। सृष्टि का प्रत्येक घटक अपने अन्दर अग्नि को संजोये हुये है।

आग का ऊर्ध्वतम रूप मनुष्य को कितना स्पृहणीय सन्देश प्रदान करता है कि तुम अपने अन्दर के शिव को, सत्य को प्रतिभासित करो, प्रगतिमय करो यह सिद्ध करो कि तुम्हारा व्यक्तित्व अग्निसम है। अत: हम प्रार्थना करते हैं। **"कृधी न ऊर्ध्वाञ्चर थाय जीवसे"** हे अग्नि देव जीवन के प्रगति पथ पर अग्रसर होने के लिये हमें समुन्नत कीजिए। हममें तेजस्विता का आधान कीजिये।

आओ इस अतीव प्रतिभा सम्पन्न प्रचण्ड देवता का अभिनन्दन करें। इसने अपनी ऊर्जा से, ऊष्मा से, तेज से, प्रगति के अनगिनत रहस्यों का उद्घाटन किया है अग्नि ने ही मानव कल्याण की अतुल सम्भावनाओं का द्वार खोला है। पावन होने के लिये अग्नि की उपस्थिति आवश्यक है। हमारे जीवन की गतिशीलता का मर्म ही अग्नि है। जिस मनुष्य ने अपने शरीर में व्याप्त अग्नि को भलीभांति प्रज्जवलित नहीं किया उसका जीवन तो राख में पड़ी तप्त चिंगारी है जो न जाने कब बुझ जाये।

प्रभु की विभिन्न कृतियों में अग्नि का चमत्कार आश्चर्यमय है जीवन और प्रकृति के विविध रूपों में व्याप्त अग्नि की अनुभूति भी एक अद्वितीय स्वाभाविक प्रक्रिया है। शायद इसलिये ही वैदिक ऋषि ने कहा है कि देवों ने प्रिय एवं हितकारी अग्नि को प्रजाओं में तेजस्वी सूर्य के समान स्थापित किया है। शरीर का संरक्षण जठराग्नि की तीव्रता पर अवलम्बित है प्रतिदिन

हम जो कुछ खाते हैं उसे पचाकर व्यर्थ अंश को बाहर कर सूक्ष्म अंश को रक्तवाहिनी नाड़ियों द्वारा सारे शरीर में संचारित कर देना प्राणाग्नि देव का ही कार्य है। अग्नि की ज्वाला शक्तिमत्ता पूर्ण है।

'तमोषधीर्दधिरे गर्भमृत्वियम्' (सामवेद 1824)

वृक्ष वनस्पति उस अग्नि को ऋतुओं के अनुसार गर्भरूप में रखते हैं। **'देवममीवचातनम्'** अग्नि रोग के कीटाणुओं का नाशक है।

'अग्निं देवासो मानुषीषु विक्षु प्रियं धुक्षेष्यन्तो न मित्रम्' (ऋग्वेद 2/4/3) अग्नि में तेजस्विता है, तुम भी तेजस्वी बनो अग्नि की ज्वाला मानव हितकारी कार्यों की साधिका है, तुम भी मानव हित में तत्पर हो जाओ। अग्नि के समान प्रकाशपुंज बनना है तो हृदय में अग्नि को धारण करो। अग्निरूप प्रभु को प्रकाशित करने के लिये हमें आग्नेय अंशों का समाहार करना होगा।

अग्नि हमें उपकार का भी उपदेश देती है जीवन में सर्वदा त्याग की प्रवृत्ति को अपनाओ और अपने कर्तव्य के प्रति सदा जागरूक रहो। आग अपने प्रकाश को, गति को, गर्मी को, अपने में ही छिपाकर नहीं रख सकती है। वैदिक ऋषि ने कितना स्पष्ट किया है। **'यस्येदं प्रविशि यद् विरोचते'** विश्व में जो कुछ भी सम्पन्न व प्रकाशित हो रहा है वह अग्नि के निर्देशन में ही हो रहा है। अग्नि देवता के कारण ही हमारा जीवन अत्यन्त समृद्ध रहा है। मानव अपने सहायक देवताओं की अजस्त्र सेवा में कितना अकेला है। उनके द्वारा प्रदत्त सेवा, उपकार के बिना मानव कितना पंगु हो जाता है। जीवन का एक क्षण भी तो सुरक्षित नहीं रहता है। अग्नि की मानव के प्रति ऐसी प्रीति है कि हम सर्वदा श्रद्धा सुमन समर्पित करने के लिए उद्यत रहते हैं। अग्नि देवता के प्रति मानव का लगाव प्राकृतिक है।

– 9 सीतामा कॉलोनी, फस्ट मैन रोड, अलवरपेट, चैन्नई

गांव में मुसाफिर

बोध कथा

एक यात्री घोड़े पर सवार होकर किसी गांव की सरहद पर पहुंचा। उसने वहां के एक निवासी को रोकर पूछा-यह गांव कैसा है? मैं कुछ समय यहाँ रहना चाहता हूँ। गाँव के निवासी ने उससे पूछा- जहाँ से आप आ रहे हो वो कैसी जगह थी? इस पर उस यात्री ने कहा-वो गांव तो बहुत बेकार था। वहाँ के लोग बहुत ही बुरे थे, बात-बात पर लड़ने-झगड़ने वाले। गाँव वाले ने कहा-भाई, आप इस गाँव में न रहें। यहां के लोग तो और भी बदतमीज हैं। आपकी तो एक दिन भी इनके साथ नहीं बनने वाली। वह राहगीर चला गया किसी और गाँव की तलाश में। इतने में एक और राहगीर आया उससे भी गाँव के उस व्यक्ति से वही सवाल किया-भाई, यह गाँव कैसा है? मैं यहाँ रहने आया हूँ। गाँव वाले ने पूछा-जहाँ से आए हो वह जगह कैसी थी? राहगीर ने कहा- वो गाँव तो बहुत ही अच्छा था। मेरी यादों में बसा है वो गाँव और वहाँ के लोग। लेकिन मेरी मजबूरी है कि मुझे अभी यहीं रहना है। गाँव वाले ने कहा- इस गाँव में आपका स्वागत है। यहाँ आपको अपार स्नेह और प्रेम मिलेगा। यह सब देख रहे एक सज्जन ने उस व्यक्ति से कहा- आपने एक को तो यह गाँव बुरा बताया और दूसरे को अच्छा। ऐसा क्यों? उसने कहा-जो प्रेम लेकर आया है वह दूसरों को भी प्रेम देगा। वह हमारे गाँव को बेहतर बना देगा। लेकिन जो नफरत लेकर आया है, वह जहाँ जाएगा बुराई ही फैलाएगा। वह इस गाँव को बर्बाद कर देगा। इसलिए मैंने चाहा कि पहले वाला राहगीर किसी तरह यहां न रहे।

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हों और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 11,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

आर्य समाज की दशा और दिशा

❑ अभिमन्यु कुमार खुल्लर

2007 में मैंने एक लेख-"क्या आर्यसमाज मूल से भटक रहा है?", लिखा था। आर्य पत्र-पत्रिकाओं तथा सुधी पाठकों ने उसका भरपूर स्वागत किया था। पाठकों ने पत्र भी लिखे थे, उनमें श्रद्धेय वेदमर्मज्ञ स्व. डॉ. सत्यव्रत राजेश भी थे। पाठक प्रतिक्रियाएँ देते हैं तो लेखक को बहुत कुछ समझ में आता है।

5 वर्ष बाद उस लेख का सिंहावलोकन करने का मन होता है कि अब लेख यह होना चाहिये कि आर्यसमाज मूल से भटक चुका है। इन पाँच वर्षों में मेरी यही सोच पक्की हुई है। समझ में नहीं आता कि इतनी अधिक संख्या में विद्वानों एवं संन्यासियों के होते हुए भी संगठन मजबूत होने के बजाय बिखर रहा है।

दिल्ली में अक्टूबर 2012 में दो अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन हुए। दस दिन के अन्दर आर्यसमाज की दो केन्द्रीय संस्थाओं द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किये जाने पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक यह संदेश निश्चित रूप से गया होगा कि हम दो गुटों में बंटे हुए हैं। स्थानीय स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक तथा अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस संदेश से हमारे विभाजन को ही संपुष्टि मिली है क्यों कि मेरी जानकारी के अनुसार इन सम्मेलनों में विभाजन समाप्त करने की कोई सार्थक पहल नहीं हुई। सामान्य, गुटनिरपेक्ष आर्यसमाजी के सामने यह समस्या खड़ी हो गई थी कि वह किस सम्मेलन में भाग ले। दोनों सम्मेलनों में भाग लेता है तो ठीक है अन्यथा विपक्षी खेमे का आदमी समझा जाकर दण्डनीय अपराधी माना जावेगा। (लेखक को व्यक्तिगत अनुभव है) यह बात मुझे और स्पष्ट हो गई कि सम्मेलनों से मेले-तमाशें चाहे वे राष्ट्रीय स्तर पर किये जावें अथवा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर "आर्यसमाज की श्रीवृद्धि" नहीं होगी और न ही युवावर्ग आर्यसमाज की ओर बहुसंख्या में आकर्षित होगा।

आर्य समाज वर्तमान समय में क्या कर सकता है या उसे क्या करना चाहिये इसे में अपनी अल्पमति के अनुसार रेखांकित कर रहा हूँ-

महर्षि ने जिन बुराइयों को नष्ट करने के लिये संघर्ष किया था, वे अब भी बनी हुई हैं; बढ़ी ही हैं। महर्षि के समय भारत की जनसंख्या 25 करोड़ थी। आज 125 करोड़ की ओर तीव्र गति से अग्रसर हो रही है। यानी बुराइयाँ पाँच गुना बढ़ी हैं। मूर्तिपूजा, तंत्र-मंत्र, अन्धविश्वास, स्वघोषित धर्माचार्यों (बाबाओं) के ढकोसले एवं दूरदर्शन पर उनका व्यापक प्रचार, फलित ज्योतिष में एकान्त श्रद्धा, शिक्षा में राष्ट्र के प्रति प्रेम का अभाव भी इसी अनुपात में बढ़ गया है। क्या प्रगतिशील कहे जाने वाले आर्यसमाज को इनसे संघर्ष या इनके विरूद्ध शंखनाद करने की आवश्यकता नहीं है?

महर्षि दयानन्द ने ब्रह्मचर्य पालन व शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिये पर्याप्त बल दिया था। ये मुद्दे आज भी प्रासंगिक हैं। ब्रह्मचर्य या वीर्यरक्षा यद्यपि यह ब्रह्मचर्य का एक छोटा सा अंग है, आज की युवापीढ़ी में एक सड़ागला अन्धविश्वास माना जाता है। शिक्षा व्यक्ति के आर्थिक स्तर को उच्च करने का आधार जरूर बन गई है पर राष्ट्रप्रेम का संस्कार डालने में असफल है क्योंकि शिक्षा के प्राथमिक स्तर से लेकर उच्चतम स्तर तक के किसी भी पाठ्यक्रम में राष्ट्रप्रेम का बीजारोपण ही नहीं किया जाता है। डी.ए.वी. संस्थाएं इस क्षेत्र में बहुत कुछ कर रही हैं पर यह अभी राष्ट्रीय पुरोगम नहीं बना है।

ब्रह्मचर्य पालन को महर्षि जीवन का मूलाधार मानते हैं। अध्ययनकाल मे संयमित जीवन, जीवन का मजबूत आधार बनता है। इस अवधि में वीर्यरक्षण 25 वर्ष की अवधि तक संचित किया हुआ यह धन, वैवाहिक जीवन के आगामी 25 वर्ष य अधिक अवधि तक काम आता है और स्वास्थ्यपर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता; यहीं नहीं स्वास्थ्य खिल उठता है। महर्षि ने 25 वर्ष, 36 वर्ष व 48 वर्ष तक ब्रह्मचर्य सेवन के तीन निकृष्ट, मध्यम व उत्तम सोपान निर्धारित कर संदेश दिया कि इनका पालन कर यदि व्यक्ति गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता है और ऋतुकाल में ही समागम करता है तो वह ब्रह्मचर्य का ही जीवन व्यतीत करता है।

पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण पर या यहीं उत्पन्न हुई विकृतियों के कारण युवा पीढ़ी की यह सोच ही बन गई है कि 16 वर्ष तक यदि लड़की कुंवारी रहती है तो उसमें कोई शारीरिक या मानसिक कमी है। यौवन का खुमार प्रारम्भ होते ही यह पीढ़ी चाहती है कि सब 'काम' जल्दी में होना चाहिए। भविष्य की चिन्ता क्यों की जावे? परिणामस्वरूप अनियंत्रित कामवासना "बलात्कार" की घटनाओं के असीमित रूप से बढ़ने का कारण बन गई है। हरियाणा की सर्वखाप पंचायत इस समस्या का हल लड़कियों का अपरिपक्व आयु 15 वर्ष में विवाह करने का प्रस्ताव पारित करती है और भूतपूर्व मुख्यमन्त्री चौटाला जी समर्थन करते हैं। सर्वखाप पंचायत यह भी मानती है युवक युवतियों में कामवासना उद्वेग का कारण 'चाऊमीन' खाना है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री सुश्री ममता बनर्जी समाज में व्याप्त 'खुलेपन' को इसका उत्तरदायी मानती है। इस क्षेत्र में आर्यसमाज कुछ कर सकता है पर वह उदासीन है।

कन्या भ्रूण हत्या व बालविवाह विकराल सामाजिक समस्याएं हैं। किसी भी धार्मिक अथवा सामाजिक संस्था ने इनको अपने कार्यक्रम का मुख्य अंग नहीं बनाया है जैसे उन्हें इनसे कुछ लेना देना नहीं है।

कन्या भ्रूण हत्या कुछ जातियों में काफी प्राचीन काल से प्रचलित है। कन्या के जन्म लेने पर उसे मारने के भीषण, रोमांचक उपायों में से एक नवजात कन्या के मुँह में नमक भरकर मार डालना था। मध्यकालीन समय से वर्तमान समय में अन्तर इतना ही आया है कि कन्या भ्रूण हत्याओं में कल्पनातीत वृद्धि हुई है। लिंग परीक्षण की खोज ने इस अनाचार को सर्वसुलभ बना दिया है। शासन द्वारा इस पर प्रतिबन्ध है पर यह बुराई घर कर चुकी है। **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** की तरह **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता** इस नारे के साथ ही क्या आर्यसमाज का स्वत: ही दायित्व नहीं हो जाता कि इस मुद्दे को वह प्रमुखता से उठाए?

बाल विवाह की स्थिति देखिए-अंग्रेजी दैनिक दि हिन्दू के 22 अक्टूबर 2012 के दिल्ली संस्करण के अनुसार विश्व में होने वाले बाल-विवाहों में 40 प्रतिशत बाल-विवाह भारत में होते हैं। राजस्थान में अक्षय तृतीया पर हजारों की संख्या में बाल विवाह होते हैं, यह प्रत्येक प्रबुद्ध भारतीय जानता है। भारत को स्वतंत्र हुए 65 वर्ष बीत चुके हैं। हिन्दू-विवाह अधिनियम प्रभावशील हुए भी दशाब्दियां बीत गई हैं। फिर भी प्रशासन राज्य और केन्द्र दोनों प्रभावशाली ढंग से, इसे रोकना ही नहीं चाहते।

महर्षि के युग में खाद्यपदार्थों में मिलावट इतनी गम्भीर समस्या नहीं रही होगी जितनी आज है। खाद्यपदार्थों में ऐसा कोई पदार्थ नहीं है जिसमें स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त हानिकारक पदार्थों का मिश्रण न किया जाता हो। अन्य लोगों के समान हम आर्यसमाजी भी उन्हीं पदार्थों का उपयोग करते हैं। फल, सब्जियाँ, घी, दूध, दालें, मिर्च-मसाले सभी तो अशुद्ध, मिलावट मिल रहे हैं। गाय-भैंस का दूध नहीं, यूरिया का, डिटरजेन्ट का दूध, मिर्च मसालों में लीद, ईंट का पावडर और कुछ चाहिए क्या?

क्या आर्यसमाज खाद्यपदार्थों की राष्ट्रव्यापी मिलावट के विरोध

का मुद्दा नहीं उठा सकता?

महर्षि दयानन्द ने मूर्तिपूजा का विरोध इसलिये नहीं किया था कि बृहत्तर भारतवासियों की आस्था को ठेस पहुँचाई जावे। उन्होंने विरोध या खण्डन इसलिये किया था कि मूर्ति पूजा ईश्वर की आराधना का आधार ही नहीं बन सकती। जड़मूर्ति में ईश्वरीय भावना मानने से कदाचार व दुराचार करते समय कोई भय पैदा नहीं होगा क्योंकि उपासक अच्छी तरह जानता है कि मूर्ति जड़ है, उससे डरने की कोई आवश्यकता नहीं, केवल निराकार व सर्वव्यापक ईश्वर ही मनुष्य को बुरे काम करने से रोकता है, भय, शंका व लज्जा का भाव जाग्रत करके।

फलित ज्योतिष ही मूर्तिपूजा का "बाई प्रॉडक्ट" है। इस चक्र में पड़कर तो कबाड़ा ही कबाड़ा है। फलित ज्योतिष व्यक्ति को अनिष्ट की आशंका से ग्रस्त कर उसकी आत्मा को निर्बल बनाता है। निर्बल मन, बुद्धि व आत्मा वाला व्यक्ति कुछ भी 'उपाय' करने को तैयार हो जाता है। वह उस मकड़जाल से निकल ही नहीं सकता। मूर्ति पूजा व फलित ज्योतिष के दुष्परिणामों का विरोध करने की क्षमता क्या आर्यसमाज के पास है? या क्षमता अर्जित करने की मनोभावना है? सम्भवतया इस भावना को प्रश्रय दिया जा रहा है कि विरोध करने से विरोध बढ़त हैं। अपनी क्लैव्यता और आत्म प्रवंचना का इससे बढ़कर उदाहरण क्या हो सकता है?

होश सम्हालने से लेकर आज पिचहत्तरवर्ष की आयु एक आर्यसमाज को रविवारीय सत्संग, वेद प्रचार सप्ताह, वार्षिकोत्सव आयोजन, डी.ए.वी.संचालन तक ही सीमित देखा है। डी.ए.वी. भी मध्यप्रदेश में सर्वत्र संचालित नहीं है। हैदराबाद सत्याग्रह व हिन्दी रक्षा आन्दोलन अपवाद कहे जा सकते हैं।

वेद प्रचार और वार्षिकोत्सव कार्यक्रमों में स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज स्वामी ब्रह्ममुनिजी जी, स्वामी समर्पणानन्द जी, स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी सत्यप्रकाश जी, स्वामी सुमेधानन्द जी (सीकर) दर्शनाचार्य प्रा. रत्नसिंह जी, डॉ. भवानीलाल भारतीय, डॉ. योगेन्द्र शास्त्री (जम्मू), आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री शिवकुमार शास्त्री, पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय, महात्मा चैतन्यमुनि जी, प्रभृति सन्यासियों एवं अन्य अनेक विद्वानों के साठ से भी अधिक वर्षों तक, आर्यसमाज नयाबाजार, लश्कर ग्वालियर में प्रवचन, उपदेश सुनने पर भी आर्यसमाज के सदस्यों में वृद्धि नहीं हुई, ह्रास ही होता चला गया। वर्तमान स्थिति यह है कि म.भा.प्रतिनिधि सभा भोपाल के प्रधान के कुप्रयास से इस आर्यसमाज पर गुंडातत्व हावी हो गया, अन्यत्र भी आर्यसमाजों का यही हाल हुआ है।

सिद्ध हो गया कि केवल प्रवचनों से, वेदमन्त्रों की व्याख्या करने, सुनने से आर्यसमाज का संगठन मजबूत नहीं होगा। हम भ्रम में जीते हैं और कुछ काल तक जीवित भी रह सकते हैं-कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उद्घोष कर। आज आर्यसमाज को कोरामिन की आवश्यकता है। आर्यसमाज को प्राणवान् बनाने का कार्य उपरोक्त वर्णित कार्यक्रम एवं जनोपयोगी कार्यक्रम ही कर सकते हैं।

वर्तमान स्थिति में आर्यसमाज एक कार्य तो कर ही सकता है-जन उपयोगी कल्याण कार्य। हमने अपनी आर्यसमाज, नयाबाजार, लश्कर ग्वालियर के वार्षिक कार्यक्रम में निःशुल्क नेत्रशिविर आयोजित करना निश्चित कर तीन-चार नेत्र शिविर लगवाए। सभी नेत्र शिविर गुणवत्ता के कारण पूर्णतया सफल रहे क्योंकि हमारे प्रधान डॉ. आनन्दमोहन स्वयं नेत्र विशेषज्ञ हैं। आर्य समाज सरिता विहार, नई दिल्ली अपने आर्यसमाज भवन में एलोपैथिक अस्पताल कुछ वर्षो से चला रहा है। आस पास के धनाभाव से पीड़ित परिवारों के लिये यह अस्पताल वरदान साबित हुआ है। आर्यसमाज अपने ही संसाधनों से औषधालय पर चालीस हजार रूपया मासिक व्यय कर रहा है। इससे तिहरा लाभ होता है। दानदाताओं के धन का सदुपयोग, उनमें और अधिक दान देने का उत्साहवर्धन एवं आर्यसमाज की नकारात्मक छवि में सुधार। इस सन्दर्भ में चण्डीगढ़ में आर्य भाई-बहनों का योगदान सुनने को मिला था। आर्य पत्र-पत्रिकाओं में इनका विवरण प्रकाशित होना चाहिये। आर्यसमाज का यह संक्रमणकाल है। इसमें लोककल्याण के कार्य अपनाकर ही जीवित रहा जा सकता है।

एक दुःखद स्थिति और बन गई है जिससे विद्वान और सन्यासीगण ही निपट सकते हैं। 'सत्यार्थ प्रकाश' के शुद्ध प्रामाणिक संस्करण के नाम पर संघर्षरत विद्वानों के कारण। सत्यार्थप्रकाश पं. गुरूदत्त विद्यार्थी को सत्रहबार गम्भीर अध्ययन करने पर भी नये अर्थ सुझाता था; उन्हें या उनके समकालीन विद्वानों को यह नहीं सूझा कि जिस सत्यार्थ प्रकाश का उन्होंने अध्ययन किया है, वह प्रामाणिक है अथवा नहीं। आज विद्वान जमकर लड़ रहे उत्साहविहीन हो जावेंगे। यह डर दिग्गजों को है ही नहीं कि वे क्या संदेश आर्यसमाजियों और गैर-आर्यसमाजियों को दे रहे हैं? परमात्मा की इन पर कृपा हो और ऋषि आत्मा इनका मार्गदर्शन करे।

22 नगरनिगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर, पिन-474001, म.प्र.

समझें तो? क्या है आर्य समाज और क्या है इसकी राष्ट्र को देन?

आर्य समाज के सम्बन्ध में अनेक व्यक्तियों में भ्रम फैला हुआ है। कुछ व्यक्ति इसे सनातन धर्म से अलग कोई धर्म मानते हैं, कुछ व्यक्ति आर्य को एक जाति मानते हैं और आर्य समाज को आर्य जाति का ही एक संगठन समझते हैं और कुछ तो यह मानते हैं कि आर्य तो बाहर से आए थे, और ऐसा भी मानते हैं कि आर्य समाजी ईश्वर को नहीं मानते।

परन्तु ये सभी मान्यताएं गलत हैं, निराधार हैं तथा यह अज्ञात षड्यंत्र और कूटनीति के कारण फैली है। यह आर्य शब्द तो हमारी सनातन संस्कृति में सम्मानजनक व श्रेष्ठता का प्रतीक माना गया है। आज इसका गलत अर्थ समझा जा रहा है, इसलिये भ्रम दूर करने हेतु आर्य समाज का संक्षिप्त परिचय और उसकी मान्यताओं की जानकारी यहां दी जा रही है।

आर्य शब्द जाति का सूचक नहीं है। यह गुणवाचक अर्थात् गुणों का सूचक है। आर्य का अर्थ श्रेष्ठ होता है। जैसे दयालु, दानी, विद्वान, शब्दों से किसी व्यक्ति के गुणों का बोध होता है। दयालु, दानी, विद्वान कोई भी व्यक्ति हो सकता है, चाहे वह किसी भी देश में, किसी भी परिवार में, किसी भी वर्ण में पैदा हुआ हो, यदि उस व्यक्ति में उपरोक्त ये गुण पाये जाते हैं, तो उसे इन्हीं दयालु, दानी, ज्ञानी नामों से पुकारा जा सकता है। ठीक इसी प्रकार गुण, कर्म, स्वभाव से श्रेष्ठ कोई भी व्यक्ति वह किसी भी देश का हो, यदि उसके गुण कर्म श्रेष्ठ हैं तो वह श्रेष्ठ माना जावेगा और श्रेष्ठ व्यक्ति को ही आर्य कहते हैं। इसलिये यह समझना चाहिए कि आर्य किसी व्यक्ति को उसके सद्गुणों के कारण प्राप्त सम्मान तथा उसे पुकारा जाने वाला सम्बोधन है। इसका सम्बन्ध किसी जाति, पंथ, मजहब या देश से नहीं है और न ही आर्य समाज ने इस आर्य शब्द की रचना की है। आर्य जन्म से पैदा नहीं होता आर्य बनना पड़ता है। आप पढ़ कर देखें, वेद, उपनिषद्, दर्शन ग्रन्थ, रामायण, गीता, महाभारत और मनुस्मृति, चाणक्य नीति, विदुर नीति आदि प्रमुख ग्रन्थों को।

-प्रकाश आर्य-"अधिवक्ता" -महू, जिला-इन्दौर, म.प्र., चलभाष-09826655117

पानी पूछे प्यास से, बता तू किस जात से

❐ गिरीश त्रिवेदी

उसने उस बालिका से पूछा कौन सी जात की है लड़की? उस बिटिया ने सहजता से उत्तर दिया "बाबा मेरी जाति मारवाड़ी है।" वह बूढ़ा सर खुजलाता ही रह गया और मैं दूर खड़ा मुस्कुराया।

आपको क्या लगता है, किसी को उसकी जाति पूछने का मतलब क्या होता है? क्या यह प्रश्न एक उन्नत और प्रगतिशील समाज में पूछे जाने लायक प्रश्न है या क्या यह पिछड़ी, सड़ीगली, बुरी और रूढ़ीवादी मानसिकता के कारण पूछा जाने वाला प्रश्न है। यही प्रश्न हमारी सरकार ने भी देश की 121 करोड़ जनता को भी पूछा है तो आप हमारे देश की सरकार को किस मानसिकता की मानते हैं।

जाति मतलब होता क्या है। क्या किसी काम को करने से वह उसकी जाति हो गयी जैसे लोहे का काम करो तो लोहार और सोने का करो तो सुनार, चमड़ा का काम किया तो चमार और पंडिताई की तो पंडित ये सब जातियां कैसे हो सकती है ये तो हमारी मात्र व्यवसायिक पहचान है। अब तो इलेक्ट्रिशियन, ड्रायविंग, शेयरब्रोकर, डॉक्टर आदि के भी पेशे विकसित हुए हैं। तो ये नई जातियां गिनी जानी चाहिए। मगर सड़ियल रूढ़ीवादी विचारधारा वाले मात्र अपने ही गणित से जाति का निर्धारण करते हैं। वे देखते हैं व्यक्ति किसके घर जन्मा है। बस इतना काफी है और कर देते हैं मनुष्य और मनुष्य के बीच अलगाव का बीजा रोपण।

याद करें भारत के आधारभूत धर्म ग्रन्थ वेद, उपनिषद्, दर्शन, गीता और गुरुग्रंथ साहब आदि कोई भी जन्मना जाति प्रथा को सही नहीं ठहराता। पूर्व काल में हमारे देश में हुए सभी महापुरूषों जैसे गुरुनानक देव जी, चैतन्य महाप्रभु, रामदास, मीरा, पीपा, धन्ना, राजिया, नरसी, जलाराम, कबीर, दादु, एकनाथ, रविदास, नामदेव, तुकाराम और ज्ञानेश्वर आदि भी एक स्वर में जन्मना जाति प्रथा की घोर निन्दा करते हैं। हमारे देश के आधुनिक महापुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, बाबा साहेब अम्बेडकर, आदि ने जन्मना जाति प्रथा को पूरी तरह समाप्त करने के लिए अपने-अपने तरीके से जीवन भर प्रयत्न किये। आज देश भर में हमारे जितने भी धार्मिक कार्यक्रम होते हैं कहीं कोई जातिगत वर्गीकरण नहीं किया जाता है। फिर भी हम और हमारी सरकार जाति क्यों पूछते हैं?

जन्मना जाति प्रथा को अपनाए रखना पिछड़ेपन और समाज के मानसिक विकार की निशानी है गत कुछ शताब्दियों में भारत पतन के मार्ग पर चल पड़ा और परिणाम स्वरूप देश सहस्त्राधिक वर्ष तक पराधीन भी रहा और पराधीन हो जाने का कारण भी सामाजिक एकता की कमी ही थी। हमने पराधीन होने की करारी थप्पड़ भी खाई फिर भी हम जाति प्रथा, ऊँच-नीच और छुआछूत को अपनाए रहे और फिर परिणाम स्वरूप लोग मुस्लिम और ईसाई बनते गये। इतना सब कुछ जानने के बाद भी हम आज भी उसी जाति प्रथा और छुआछूत को अपनाए रहेंगे तो हम से बड़ा मूर्ख कौन होगा। अब तो प्रायश्चित का समय है, सामाजिक एकता का समय है। जिन-जिन के पूर्वज अपमानित होकर विधर्मी हो गये थे उनसे हमें क्षमा मांगने का समय है। उन्हें फिर से घर लाकर सम्मानित करने का समय है। हमारे वे भाई कब तक अपने पैतृक धर्म से वंचित रहेंगे। समाज ने कोई गलती की थी तो समाज को ही उसे सुधारना भी होगा।

यह भी देखने में आता है कि समाज तो आपस में एक रस होता जा रहा है लेकिन हमारे शातिर राजनेता जातिगत विद्रोहों में समाज को झोंक रहे हैं। कोई जाटों का चहेता बनता है तो कोई यादवों का। कोई छोटों को छोटा ही रखकर खुद को मोटा ताजा हाथी जैसा बना रहा है तो कोई छद्मवेष धारण कर मुस्लिमों को ही पुचकारने और भड़काने जाता है। प्रिय देश वासियों इस तरह के स्वार्थी नेताओं ने देश की जनता को खूब छला है। इस तरह जाति आधारित राजनीति करने वाले एवं मात्र मुस्लिम में तुष्टिकरण से चुनाव जीतने की आशा रखने वाले नेता समाजिक एकता के दुश्मन है। राजनीति का शुद्धिकरण करने के लिए जो भी जाति आधारित राजनीति करे उन्हें कतई अपना वोट न दें। जो ईमानदारी से मात्र राष्ट्रहित की बात करे और काम करे वही हमारा वोट पाने का अधिकारी हो।

जातियों को इसलिये भी जीवित रखा जा रहा है ताकि आरक्षण का निर्धारण ठीक से किया जा सके। श्री अम्बेडकर ने आरक्षण का प्रावधान दस वर्षों के लिए रखा था। आरक्षण का अर्थ होता है साधनों की कमी है अतः जिन्हें देना अनिवार्य है उन्हें पहले मौका दिया जाए। यदि आज आजादी के बाद पैंसठ वर्षो तक में भी हम शिक्षा और रोजगार के इतने अवसर पैदा नहीं कर पाये कि सबको आसानी से मानचाहे चुनाव करके आगे बढ़ने का मार्ग सुलभ हो। शिक्षा और रोजगार जैसी प्राथमिक बातों में भी हम नहीं सम्भले तो आजादी के बाद आज तक हमने किया क्या? आरक्षण को जीवित रखने का एक ओर अर्थ होता है कि देश प्रगति नहीं कर पा रहा है। हमारे पास साधन सीमित हैं। अतः अभाव के अन्धकार में से ही छीन झपट कर अपना हिस्सा प्राप्त करना इस देश की जनता की नियती है।

अभाव को पैदा करके आरक्षण को जीवित रखना समाज में फूट डालने का साधन है और नेताओं का चुनाव जीतने का हथियार है। हमें सरकार ऐसी चाहिये जो प्रचुर मात्रा में उच्च शिक्षा और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये ताकि प्रत्येक के लिए मन चाहा चुनाव करने का विकल्प हों। हमसे जाति पूछने की सरकार की नीति के .... मंसा कुछ भी हो लेकिन हमें भी हमारी जाति मालूम होनी ही चाहिये ताकि पूछने वाले को हम बता सकें की हमारी जाति कौन सी है? जाति का प्रश्न आते ही आप सोचने लग सकते हैं कि मेरी जाति परमार या महार या तेली या जाट या ब्राह्मण या पटेल है। लेकिन यह उत्तर पूरी तरह गलत होगा। याद रखें पूरे भारत शास्त्रोक्त है कि हम सब की जाति आर्य है। आर्य का अर्थ होता है श्रेष्ठ व्यक्ति संस्कारी व्यक्ति। यहाँ तक कि हम भारतीयों के सम्प्रदाय अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन मूल से हम सब एक हैं। हमारे पूर्वज एक थे। हम सभी का रक्त एक है। कोई बाहर से आया हुआ नहीं है। सबकी जड़ें मिट्टी में गड़ी हैं। भारत ही हम सब की माँ है और आर्य ही हम सबकी जाति है। इस बात में पूरी सत्यता है अतः अब हमें सामाजिक दोषों को मिटाकर प्रायश्चित करना अनिवार्य है। भारत की प्रगति के लिए, भारत की खुशहाली के लिए पूरी जनता को एक रस, समरस हो जाना आवश्यक है। तथाकथित जातियों के आवरण को अब बस हम ढोल बन्द करें। अब जरा रविदास जी की बात भी देख लें।

जन्म जाति को छोड़कर, करनी जान प्रधान।
यही वेद को धर्म है-कहे रविदास बखान॥
रविदास जनम के कारण होत न कोई नीच।
नर को नीच कर डारे है, ओछे कर्म की कींच॥

-496, शनीवार पेठ, इलिना अपार्ट, पुणे (महा.)

स्वास्थ्य दर्पण

आयुर्वेद में गाय की उपयोगिता

❐ वैद्यवर रामनारायण मिश्र 'शान्त'

❑ गाय के गोबर को शरीर में मलकर शीतल जल से स्नान करें तो शरीर चिकना और स्वच्छ हो जाता है। उसे चर्मरोग कभी नहीं होता। ❑ गाय के गोबर से घर लीपने से अनेक विषैले जीव-जन्तु कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। ❑ तारपीन के तेल में कपूर मिला लें, उसमें गाय के गोबर का रस मिलाकर नाक में डालने से पीनस (पालकी) रोग के कीड़े निकल जाते हैं और रोगी ठीक हो जाता है। ❑ शरीर में निकले हुए किसी फोड़े को बार-बार सुंघावे, फोड़ा बैठ जायेगा, या बिना दर्द किये पक कर फूट जायेगा। ❑ गाय की पूंछ से शनिवार या रविवार को आँखें झाड़ देने से आँखों की छूत की बीमारियाँ (जैसे आँखों की जलन, कटन या खुजली) दूर हो जाती है। ❑ यदि किसी व्यक्ति को विषैला सांप काट ले, उस व्यक्ति को गाय के गोबर में दाब देने से आशातीत लाभ होता है। ❑ गाय के अरने उपले जलावें, अंगार हो जाने पर पानी में बुझा दें, उसे पीस कर नमक और कपूर मिलाकर मंजन करें तो दांतों के समस्त रोग दूर हो जाते हैं। ❑ गाय का घी नाक द्वारा सुड़कने से पुराने से पुराना सर-दर्द ठीक हो जाता है। ❑ गाय के दूध का फेन लगाने से सिर का गंजापन दूर होता है। ❑ जुगाली करते समय गाय जो फैन गिराती है, उसे लगाने से रंतौधी ठीक होती है। ❑ गाय का ताजा मट्ठा हींग से बघार कर जीरा नमक डालकर पीने से पेट के समस्त विकार दूर होते हैं। ❑ चोट खाई हुई मरणासन्न, बेहोश गिलहरी को गाय का गोबर सुंघाईये, वह होश में आकर जीवित हो जाती है। ❑ यदि किसी बालक को सूखा रोग हो तो गाय का ताजा गोबर उसमें एक पान पीसकर मिला लें, उस बालक की पीठ पर (दोनों फेफड़ों के पीछे) हथेली से 5-7 मिनट तक मलें फिर पानी से धो दें तो उस स्थान पर लाल-लाल कीड़े दिखाई देंगे, उन्हें फुर्ती से बाहर निकाल दें (अन्यथा वह पुनः अन्दर घुस जायेंगे) इस प्रकार सप्ताह में दो बार करने से 15 दिन में सूखा रोग समाप्त हो जाता है।- (अनुभूत योग) ❑ यदि बच्चे का सिर पक जाये, उसमें फोड़ा-फुंसी हो जावे तो गाय का मक्खन 101 बार पानी से धोकर रोहनी पीसकर मिला लें, उसे लगाने से सिर का रोग ठीक होता है। ❑ यदि किसी को पाण्डु (प्लीहा) रोग हो उसे लोहभस्म शहद के साथ चटावे और ऊपर से 10 ग्राम गोमूत्र से 10 ग्राम ईख के रस का सिरका मिलाकर पिलावें। एक माह में पाण्डु रोग ठीक हो जायेगा। ❑ गाय के गोबर का ताजा रस 10 ग्राम, काला नमक 2 ग्राम मिलाकर तीन चार-बार पिलावें तो भयंकर वायु गोला का दर्द शान्त हो जाता है। ❑ यदि किसी बालक को श्वास रोग (हांफना) हो उसे पहली बार ब्याही हुई गाय की गिजरी (पहली बार निकाला हुआ दूध), ताजी, बिना गर्म की हुई, बालक को दौड़ाकर जब श्वास फूलने लगे उसे 100 ग्राम पिला दें, सदैव के लिए श्वास रोग ठीक हो जायेगा। उस दूध को थाली में सुखाकर रख लें और एक माह तक प्रयोग करें। ❑ गाय के गोबर के मलने से कालिख लगे हुए काले हाथ स्वच्छ हो जाते हैं।

जन्म स्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव

नई दिल्ली- आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन शनिवार, रविवार एवं सोमवार दिनांक 09, 10, 11 मार्च 2013 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियां अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों/आर्य बहनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। टंकारा में आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

आप अपने आने की पूर्व सूचना (लगभग एक माह पूर्व) मन्त्री, श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर अथवा आचार्य, श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा, राजकोट, गुजरात-363650 पर सूचना देकर कृतार्थ करें।

मन्त्री, श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 5000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससे हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	(उप-प्रधाना)	(मन्त्री)

वेद वाणी में विश्वशान्ति

❒ श्री देवनारायण भारद्वाज

यह सर्वमान्य तथ्य है कि संसार का प्रथम ग्रन्थ वेद है। वेदों में भी ऋग्वेद को सम्पूर्ण विश्व ऐसी मान्यता देता है। वेद वास्तव में वह अथाह सागर हैं जिनमें अतुल रत्न-राशि भरी पड़ी है। प्रश्न उनके मन्थन का है। वेदों में मानवीय व्यवहार के हर विषय का सविस्तार समावेश किया गया है। इसीलिए तो महर्षि दयानन्द सरस्वती वेदों को ही सब सत्य विद्याओं का आधार मानते थे। वेदों में ईश्वर-उपासना, कर्मकाण्ड तथा मोक्ष के मार्ग का ही वर्णन नहीं है, अपितु उनमें साधारण जन के उपयोग की व्यावहारिक बातें भी प्रचुर मात्रा में हैं। जहा एक ओर कृषि, व्यवसाय, शिल्प और संगीत का ज्ञान मिलता है, वहाँ दूसरी ओर राष्ट्ररक्षा की ओर भी सचेत किया गया है। भारत के लिए यह राष्ट्र-रक्षा की समस्या ऐसी है, जिसके समाधान हेतु सदैव सजगता की आवश्यकता है। देखिए वेद भगवान् किस प्रकार हमें राष्ट्र-रक्षा की प्रभूत प्रेरणा देते हैं।

हे राष्ट्रपति! तू इस राष्ट्र के हित के लिए बहुत से शस्त्र-समूह को अपने वश में कर, बहुत से मनुष्यों को अपने अधीन शासित कर सेना बना और विद्वानों को सत्कार योग्य धन प्रदान कर। हजारों धनों और बलों को शासन में ला। शत्रु को पराजित करने वाले बल से तूर्वयान (शीघ्रगामी विमानों) से युक्त राष्ट्र-निवासी प्रजाजन को उन्नति की ओर ले जा व उत्तम पद प्रदान कर। तेरा शस्त्र-सेना-बल का संग्रह कार्य जैसा पहले किया है, आज भी वैसा ही राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने वाला है। (ऋग्वेद मं. 6.18.13)

इस मन्त्र में राष्ट्र-नायक को राष्ट्र की रक्षा हेतु सेना व शस्त्र-बल में निरन्तर रत रहने का निर्देश दिया गया है। एक और मन्त्र भी इसी प्रकार का स्पष्ट निर्देश देता है।

हे उत्तम विद्वान् वीर नायको! जिस प्रकार गौओं के सींग सबसे ऊंचा तथा उसके शरीर की शोभा के लिए भी होते हैं, उसी प्रकार आप लोगों का सबसे उत्तम, शत्रु को मारने वाला शस्त्रास्त्र बल भी प्रजा को रक्षा देने वाला तथा शोभा, लक्ष्मी को बढ़ाने वाला हो। प्रकाश और जल देने के लिए जिस प्रकार सूर्य ही सर्व प्रकाशक है, उसी प्रकार हे राष्ट्रनायको! प्रजा को विविध मार्गों में चलाने के लिए आप मार्गदर्शक हो, आप लोग वेगवान अश्वों के समान उत्तम सामर्थ्यवान, उत्तम भूमियों के स्वामी और उत्तम मार्ग में चलने वाले होवो। आप लोग राष्ट्र के ऐश्वर्य की वृद्धि के लिए सम्मान्य मनुष्यों की भांति होवो, सदा सावधान रहो तथा पदाधिकार के मद में अपव्ययी और उपेक्षाकारी मत बनो। (ऋग्वेद मं. 5.59.3)

उपर्युक्त मन्त्र में सैन्य व शस्त्रबल को गाय के सींग की उपमा इसीलिए दी गई है कि वह सदैव ऊँचा रहने से राष्ट्र में श्रीवृद्धि करता है। साथ ही यह भी कहा गया है कि राष्ट्रनायकों को पदाधिकार का मद कदापि न होना चाहिए। राष्ट्र के धन का अपव्यय भी नहीं करना चाहिए। अगले मन्त्र में भी सेना के संयोजन पर बल दिया गया है।

राष्ट्र के वीर पुरुषो! रथों को धारण करने वाले धुरों में शीघ्रगामी अश्वों एवं शस्त्रवर्षणशील सेनाओं को संगठित करो। स्वर्ण या लौह धातु के कवचों को धारण करके समस्त स्पर्धाशील शत्रुओं को विशेष रूप से उखाड़ डालो। सन्मार्ग पर शोभापूर्वक जाने वाले रथ निरन्तर उन्नति की ओर बढ़े। (ऋग्वेद मं. 5.55.6)

इस मन्त्र में राष्ट्र की रक्षा के लिए शत्रुओं को समाप्त करने का निर्देश है साथ ही सन्मार्ग की प्रेरणा भी, जिससे कोई अन्याय न हो। अगला मन्त्र भी इस ध्येय की पूर्ति हेतु अविरल आगे बढ़ने का आग्रह करता है। बाधाओं को लांघकर लक्ष्य प्राप्त करने का सन्देश इस मन्त्र में संचित है।

विद्वान वीर पुरुषो! अपने सत्कार के लिए जहाँ तक जा सको, वहां तक अवश्य जाओ। पहाड़ भी न रोक सकें, नदियां भी न रोक सकें। आप लोग आकाश और भूमि दोनों स्थानों पर परिभ्रमण करो। उत्तम ध्येय से जाने वाले आप लोगों के रथयान व विमान आदि अनुकूल रूप से चला करें। (ऋग्वेद म. 5.55.7)

इस मन्त्र ने थल-जल और नभ तीनों मार्गो से आगे बढ़कर राष्ट्र-रक्षा के लिए सजग रहने का संकेत किया है। आगे आने वाला मन्त्र भी राष्ट्र-रक्षकों को सज्जित रहने का सन्देश देता है।

हे वीर पुरुषो! आप लोगों के कन्धों पर शत्रु-नाशक शस्त्रास्त्र सजें और पैरों में स्थिरतायुक्त जूते आदि हों, छातियों पर स्वर्ण के आभूषण समान कवच हों। रथों पर सुशोभित होकर अग्नि के समान कान्ति व प्रताप से युक्त होकर बाहुओं में विशेष चमकवाले शस्त्रास्त्र धारण करें और सिरों पर विविध प्रकार से मढ़ी व बुनी हुई स्वर्ण या लोहे की पगड़ियां हों। (ऋग्वेद म. 5.54.11)

उपरोक्त वेश-भूषा की युद्ध में ही आवश्यकता होती है। जो सेनाएं अपने साज-सामान से सदा सुसज्जित होती हैं वे सर्वदा विजयी होती हैं।

जो उदार हृदय, शस्त्रों से विशेष चमकने वाले, शस्त्रों में विद्युत का प्रयोग करने वाले विद्युत के विशेष ज्ञानी क्रान्तिदर्शी नाना पदार्थों को शिल्प द्वारा निर्माण करने में कुशल विद्वान होते हैं, उनसे लाभ लेने को उत्सुक जनो! उन वायु स्वभाव, बलशाली, अप्रमादी और ज्ञानी जनों को न्यायमुक्त वचनों के सम्मानित और आनन्दित करो। (ऋग्वेद मं. 5.52.13)

उपर्युक्त मन्त्र में राष्ट्र-रक्षा के निमित्त विद्युत के यन्त्र बनाने वाले वैज्ञानिकों के प्रोत्साहन की बात है। राष्ट्र को ऐसे वैज्ञानिकों का सदैव सम्मान करना चाहिए जिससे वे अणु आयुध निर्माण कर राष्ट्र को समर्पित करते रहें। आगामी मन्त्र में हर ओर से राष्ट्र-रक्षा का सन्देश दिया गया है।

हे शत्रुहन्ता राष्ट्रनायक! तू आकाश से पड़ने वाले ओलों के समान तेजोमय आग्नेय अस्त्र शत्रुनाशक कठोर गोले (अणुबम) आदि फैंक। हे ऐश्वर्यवान! तू उत्तम शासक बनकर शत्रु और प्रजाजन दोनों को भली प्रकार नियन्त्रित कर। पूर्व पश्चिम, उत्तर-दक्षिण, नीचे-ऊपर सभी ओर से दृढ़ पोरुवाले दण्ड से पशु के समान दुष्टजनों को दण्डित कर। (ऋग्वेद मं 7.104.19)

वेद राष्ट्र को विदेशी शत्रुओं से रक्षा करने का सन्देश तो देता ही है, वह देश के भीतर बसे शत्रुओं की और भी संकेत करते हुए, उनसे सावधान रहने और उन्हें नष्ट करने का निर्देश देता है। दोनों प्रकार के शत्रु राष्ट्र के लिए बराबर कष्टप्रद होते हैं।

बहुत से कुत्ते के समान चाल चलने और दूसरे सज्जनों को पागल कुत्ते के समान बिना प्रयोजन काटने तथा अशुभ भाषण करने और गुर्रा गुर्राकर डराने वाले लोग राष्ट्र में मालिक बनकर बैठ जाना चाहते हैं। हिंसाकारी लोग ही अहिंसनीय राष्ट्रपति को भी मारना चाहते हैं। शक्तिशाली शासक क्षुद्र पुरुषों को दण्ड देने के लिए अपने शस्त्रबल

को सदा तेज करता रहे। अवश्य ही वह प्रजा को पीड़ा देने वाले दुष्ट पुरुषों को दमन करने के लिए विद्युतवत् आघातकारी शस्त्र बनाए और उन पर छोड़े। (ऋग्वेद मं. 7.104.20)

वेद हमें एक और भी चेतावनी देता है कि दीर्घकाल तक अपने प्रभाव का उपयोग कर कोई शासक न रहे। जब भी वह असमर्थ हो नये व्यक्तियों के लिए पद छोड़ दे।

हे उत्तम पुरुषो! सेवा और सभा के अध्यक्ष जनो! आप लोग जरावस्था को प्राप्त निरन्तर क्षीण होने वाले पुरुष से वरण करने योग्य पदाधिकार को कवच के समान परित्याग कर दो और फिर उस स्थान पर जवान पुरुष, कार्यभार वहन करने की शक्ति से पूर्ण कान्तियुक्त जवान पुरुष को ही उस नायकत्व के पद पर नियुक्त करो जैसे बूढ़े असमर्थ आदमी से सेना में कवच ले लिया जाता है और जो उसे उठा सके, उस पुरुष को पुनः दे दिया जाता है। उसी प्रकार वरण-योग्य नेता पद भी बूढ़े से ले लिया करो और पदभार वहन करने की क्षमता वाले युवक को दे दिया करो। (ऋग्वेद मं. 5.78.5)

वेद के उपर्युक्त मन्त्र आज भी हमारे राष्ट्र की स्थिति के अनुकूल हैं और हमें राष्ट्र-रक्षा की पर्याप्त शिक्षा देते हैं। शास्त्रास्त्र, विमान और अन्यान्य वैज्ञानिक उपकरण बनाने की विधियाँ भी वेदों में हैं। भारतीय अनुसन्धानकर्त्ता पूर्ण सुविधाओं के साथ यदि इधर ध्यान दें तो अवश्य ही आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त होने की आशा है। (संकलित)

टंकारा ऋषि बोधोत्सव यात्रा

ऋषि जन्मभूमि, टंकारा में आगामी ऋषि बोधोत्सव (महाशिवरात्रि) का आयोजन समारोहपूर्वक किया जा रहा है। कई भाई-बहनों के आग्रह पर उत्सव के साथ यात्रा/भ्रमण का भी कार्यक्रम है। 7 मार्च, 2013 प्रातः से 13 मार्च, 2013 सायं 7:30 बजे तक अपना बहुमूल्य समय इस कार्यक्रम के लिए रखें। आपकी टंकारा यात्रा सुखद एवं मंगलमय हो, यही हमारी परमात्मा से प्रार्थना है। ध्यान रहे आप महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली की यात्रा करने जा रहे हैं, आप अपने त्याग, सहयोग, उत्साह को इस काल में बनाये रखें। यात्रा रेल द्वारा होगी। इस बार हमने सोमनाथ मन्दिर की यात्रा करने का भी मन बनाया है। खान-पान, ठहरने का प्रबन्ध उचित करने का पूरा प्रयत्न होगा, फिर भी आपके मन के अनुकूल न हो, कहीं कमी का अनुभव हो तो चर्चा का विषय न बनायें।

वरिष्ठ नागरिक जिनकी आयु 60 वर्ष से ऊपर है, गाड़ी में रियायत लेने वाले आयु प्रमाण-पत्र साथ रखें। टंकारा में मौसम थोड़ी गर्मी का होगा, लगभग यहाँ के अप्रैल-मई की तरह। अतः हल्का-फुल्का बिस्तर, पहनने के कपड़े एवं केवल दैनिक उपयोग की सामग्री, पीने का पानी और दैनिक उपयोग में आने वाली दवाई साथ रखें। सामान उतना साथ लें जो आप स्वयं उठा सकें। अपने सामान की सुरक्षा स्वयं करें। कीमती सामान, धनराशि साथ न रखें। गर्म-कपड़ों में आप स्वेटर, शॉल, ओढ़ने के लिए चद्दर साथ रखें।

कार्यक्रम

- **दिनाँक 7 मार्च, 2013 (बृहस्पतिवार)** को सराय रोहिला रेलवे स्टेशन से पोरबन्दर एक्सप्रैस (गाड़ी नं. 19264) द्वारा प्रातः 8:20 पर रवाना होंगे। आप स्टेशन पर आधा घंटा पहले पहुंचने की व्यवस्था करें। दोपहर का भोजन साथ लायें। समय का पालन अति आवश्यक है। रात्रि का भोजन गाड़ी में होगा।
- **दिनाँक 8 मार्च, 2013 (शुक्रवार)** को प्रातः 8.10 बजे राजकोट पहुँच कर वहाँ से नाश्ता करके टैक्सी द्वारा टंकारा दोपहर तक पहुँच जायेंगे। दोपहर का भोजन टंकारा में होगा।
- **दिनाँक 9-10 मार्च, 2013 (शनिवार-रविवार) :** महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली टंकारा में ऋषि बोधोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनायेंगे। गस दौरान आवास तथा भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।
- **दिनाँक 11 मार्च, 2013 (सोमवार) :** टंकारा में प्रातः नाश्ता करके टैक्सी द्वारा सोमनाथ मन्दिर के लिए रवाना होंगे। दोपहार का भोजन सोमनाथ में होगा। दिन में मन्दिर तथा अन्य दर्शनीय स्थानों को देखेंगे। सांयकाल आरती तथा Sound and Light का कार्यक्रम देखेंगे। रात्रि विश्राम सोमनाथ Guest House में होगा।
- **दिनाँक 12 मार्च, 2013 (मंगलवार) :** सोमनाथ से प्रातः 7 बजे जूनागढ़ के लिए प्रस्थान करेंगे। नाश्ता रास्ते में होगा। जूनागढ़ में वहां का किला देखेंगे। दोपहर का भोजन वहां करके राजकोट के लिए प्रस्थान करेंगे। हम लगभग सायं 5 बजे तक राजकोट रेलवे स्टेशन पहुंच जायेंगे। राजकोट से 7.30 बजे सांय पोरबन्दर-सराय रोहिला एक्सप्रैस (गाड़ी नं. 19263) द्वारा वापिस दिल्ली के लिए प्रस्थान करेंगे।
- **दिनाँक 13 मार्च, 2013 (बुधवार) :** ईश्वर का धन्यवाद करते हुए हम गाड़ी द्वारा सायं 7.30 बजे सराय रोहिला स्टेशन पर पहुंच जायेंगे।

विशेष : ध्यान रहे कि टंकारा तथा सोमनाथ में ठहरने के लिए पहले से प्रबन्ध करना होगा तथा रेलगाड़ी की बुकिंग भी पहले से करानी होगी, इसलिए अपने नाम सोच समझकर शीघ्रातिशीघ्र दे दें। अगर कोई भाई-बहिन किसी कारणवश न जा सके तो कृपया जाने से 7 दिन पहले हमें अवश्य सूचना दे दें। कम-से-कम कटौती की बाद उनका पैसा लौटा दिया जायेगा।

अनुमानित व्यय : प्रति व्यक्ति (साधारण) 3,100 रु.; (वरिष्ठ नागरिक पुरुष) 2,900 रु. तथा (वरिष्ठ नागरिक महिला) 2,800 रु. No-Profit No-Loss के आधार पर रखा गया है। इसमें खाने, ठहरने, गाड़ी का किराया आदि सम्मिलित है। राशि कृपया 3 दिसम्बर, 2012 तक अवश्य निम्न व्यक्तियों के पास जमा करवा दें। रेलवे टिकट की बुकिंग में परेशानी को देखते हुए इच्छुक भाई-बहन अपनी राशि शीघ्रातिशीघ्र जमा करवा दें। हालात के अनुसार प्रोग्राम में थोड़ी/बहुत तबदीली हो सकती है।

विशेष : दिल्ली कैन्ट स्टेशन पर सभी गाड़ियाँ रुकती हैं। वहीं से गाड़ी पकड़ सकते हैं और वहाँ उतर भी सकते हैं।

महेन्द्र प्रताप साहनी
C-4F/239 जनकपुरी, नई दिल्ली
मोबाइल नं. : **09311357493**

ऊषा अरोड़ा / राम चन्द्र अरोड़ा
C-5A/216 जनकपुरी, नई दिल्ली
मोबाइल नं. : **09910650690** / दूरभाष : **011-25521814**

વેદોના રચયિતા કોણ?

આ અનુવાદ ઇન્ટરનેટ પર વેબસાઈટ પર હિન્દીમાં આવેલ લેખનો ગુજરાતી અનુવાદ છે. મૂળ લેખ માટે જુઓઃ- http://agniveer.com/who-wrote-vedas/

મોટા મોટા વિદ્વાનો અને શોધકર્તાઓ વેદને માનવ સભ્યતાનું સહુથી પ્રાચીન પુસ્તક માને છે. એ પોતાના જન્મના સમયથી આજ સુધી પોતાના મૂળ સ્વરૂપમાં જેમના તેમ સુરક્ષિત છે. એમને મૂળ સ્વરૂપમાં સુરક્ષિત રાખવાની અનોખી વિધિ આપણા ઋષિમુનિઓએ બનાવી છે, જે અષ્ટવિકૃતિ પાઠના નામે જાણીતી છે. સંસારના મોટા ભાગના વિદ્વાનો આને એક મહાન આશ્ચર્ય માને છે.

વૈદિક સંસ્કૃતિના ઘોર વિરોધી (જેઓના પ્રવચનોનું ખંડન પ્રસિદ્ધ સમાચાર ચેનલ (સુદર્શન) પર આવતું રહે છે, એવા ડો. જાકિર નાયકના અને જાણીતા ઇસ્લામિક વિદ્વાન અબ્દુલ્લા તારિક પણ વેદોને પ્રથમ ઈશ્વરીય પુસ્તક માને છે. જાકિર હુસેને પોતાના વહાબી ફાઉન્ડેશનમાં ભલે સાર્વજનિક રીતે એ વાતનો સ્વીકાર ન કર્યો હોય, પણ એનું ખંડન તો ક્યારેય નથી કર્યું. વેદોમાં મહમ્મદની ભવિષ્યવાણી સિદ્ધ કરવાની એમની સાજિશથી એ વાતની પુષ્ટિ થાય છે કે તેઓ વેદોને આધિકારીક રૂપે પ્રથમ ઈશ્વરીય પુસ્તક માને છે. એમ તો એમનો આ પ્રયત્ન જાણીતા કાદિયાની વિદ્વાન મૌલાના અબ્દુલ હક વિદ્યાર્થિની જેમની તેમ નકલ છે.

કાદિયાની મુહીમનો દાવો હતો કે વેદ પ્રથમ ઈશ્વરીય જ્ઞાન છે અને મિર્જા ગુલામ છેલ્લા પૈગમ્બર. વેદમન્ત્રોના ખોટા અર્થ કરવામાં અને હેરા-ફેરી કરવાના એમના પ્રયત્નોને આપણે નકાર્યા છે. આટલી બધી મર્યાદાઓ છતાં વેદોને પ્રથમ ઈશ્વરીય પુસ્તકના રૂપમાં મુસલમાનો વચ્ચે માન્યતા અપાવવના એમના પ્રયત્નો વખાણવા યોગ્ય છે.

વાસ્તવમાં એવી ધારણા કે વેદ ઈશ્વરીય જ્ઞાન નથી – ઈશ્વરને ન માનવા વાળાઓ અને સામ્યવાદિઓની છે. તેમ છતાં તેઓ વેદોને પ્રાચીનતમ તો માને જ છે. એમની આ માન્યતાનું મૂળ એ વિચારમાં છે કે મનુષ્ય માત્ર કેટલીક રાસાયણિક પ્રક્રિયાઓનું પૂતળું માત્ર છે. ગમે તે હોય, આ લેખ એ નાસ્તિકો અને સામ્યવાદિઓની ખોખલી દલિલો અને એમની રાસાયણીક પ્રક્રિયાઓના અનુત્તરિત પ્રશ્નો પર વિચાર કરવા માટે નથી.

ધ્યાન આપવા જેવી એ વાત છે કે નાસ્તિકોના આ મોર્ચાને હવે કેટલાય હતાશ મુસ્લિમોએ પકડી લીધો છે, જે પોતાના લેખો મારફતે વેદોની ઈશ્વરીયતાને નકારવામાં લાગેલા છે. પણ પોતાના જોશમાં એમને એવા હોશ નથી કે આવી રીતે તેઓ પોતાના જ વિદ્વાનોને ખોટા સિદ્ધ કરી રહ્યા છે અને ઇસ્લામની મૂળભૂત અવધારણાઓનો એકડો પણ ભૂસી રહ્યા છે. અમે તો એ વિદ્વાનોને કહેવા માંગીએ છીએ કે પહેલા પોતાના એવા વિદ્વાનોની વિરુદ્ધમાં ફતવો જાહેર કરે – જે વેદોને પ્રથમ ઈશ્વરીય પુસ્તક માને છે કે વેદોમાં મોહમ્મદને સિદ્ધ કરવાના પ્રયત્નો કરવામાં લાગેલા છે, સાથે જ તેઓએ પોતાના નવા કુરાનને નિષ્પક્ષતાથી જોવાની દરિયાદિલી બતાવી છે.

આ લેખમાં આપણે એ જોઈશું કે ઋષિઓને વેદોના રચયિતા શા માટે ન માની શકાય? જેમ કે નાસ્તિકો અને આ નવા મુસલમાનોનું કહેવું છે. હવે સવાલ થાય છે કે જો ઋષિઓએ વેદોની રચના નથી કરી તો પછી વેદોના રચયિતા કોણ છે? આ સવાલ એવો જ છે કે જેમ કે એમ પુછવું કે આ જીવન કોણે બનાવ્યું? આ બ્રહ્માંડની રચના કોણે કરી? બુદ્ધિમાન પ્રાણી છે વિગેરે.

આ સવાલ આત્મમંથન અને વિશ્લેષણ માંગી લે છે અને અમારો આ વિષય પર નિશ્ચિત મત છે. પણ કારણ કે વેદ બધાંને પોતાના વિવેકથી વિચારવાની રજા આપે છે. એટલે જો કોઈ આપણા સિદ્ધાન્ત કે વિચારો સાથે સહમત ન થાય તો એનો અર્થ એવો નથી થતો કે તેઓને વેદ નરકની આગમાં ભસ્મ કરી નાખશે અને આપણે ક્યાંક સ્વર્ગમાં દ્રાક્ષ વિગેરેનો આનન્દ લઈશું. પરંતુ જો કોઈ સત્યની શોધમાં પોતાની પુરી સમજ અને પ્રામાણિકતાથી જોડાઈ જાય તો ઈશ્વર એને યોગ્ય

ઉત્તમ ફળ આપે છે. વૈદિક સિદ્ધાન્તો અને અંધશ્રદ્ધાવાદી વિચારધારામાં આજ અંતર છે. વૈદિક સિદ્ધાન્તોનો આધાર કોઈ અંધશ્રદ્ધા નથી કે ન તો કોઈ દબાણ છે, માત્ર વૈજ્ઞાનિક અને વ્યવહારિક દૃષિટિકોણ પ્રત્યે વચનબદ્ધતા છે.

આ પરિચય પછી, આવો શોધ કરીએ – પહેલા આપણે વેદોને ઋષિકૃત કહેનારાઓનો પક્ષ જોઈશું, પછી આપણો જવાબ અને તર્ક જોઈશું.

અવૈદિકોનો દાવોઃ- વેદ ઈશ્વરીય નથી. એ પણ રામાયણ, મહાભારત, કુરાન આદિની જેમ જ માનવ રચિત છે. તફાવત માત્ર એટલો જ છે કે રામાયણ અને મહાભારતના રચયિતા જુદા જુદા હતા અને વેદ, ગુરુ ગ્રન્થ સાહેબની જેમ જ સમય સમયે જુદા જુદા લોકો દ્વારા લખાતા રહ્યા. એટલે વેદ અનેક લોકોના લખાણનો સંગ્રહ માત્ર છે. એ લોકોને જ પાછળથી 'ઋષિ' કહેવામાં આવ્યા અને આગળ ચાલતા વેદોને 'અપૌરુષેય' સિદ્ધ કરવા માટે એ ઋષિઓને જ દૃષ્ટા કહ્યા. બીજા કેટલાય ગ્રન્થોમાં ઋષિઓને સ્પષ્ટ રૂપે 'મન્ત્રકર્તા' કહ્યા છે. ઉદાહરણ તરીકે ઐતરેય બ્રાહ્મણ ૬.૧, તાંણ્ડય બ્રાહ્મણ ૧૩.૩.૨૪, તૈત્તરીય આરણ્યક ૪.૧.૧, કાત્યાયન શ્રૌતસૂત્ર ૩.૨૮, ગૃહ્યસૂત્ર ૨.૧.૨૩, નિરુક્ત ૩.૧૧, સર્વાનુક્રમણી પરિભાષા પ્રકરણ ૨.૪, રઘુવંશ ૫.૪. આજે પ્રત્યેક વેદમન્ત્રના પોતાના ઋષિ છે – એ વ્યક્તિ કે જેણે એ મન્ત્રોની રચના કરી છે. એટલે ઋષિઓને વેદમન્ત્રોના રચયિતા ન માનવા એક અન્ધ વિશ્વાસ જ છે.

અગ્નિવીરનો ઉત્તર – ઋષિઓને વેદમન્ત્રોના રચયિતા માનવાના આ દાવાનો આધાર 'મન્ત્રકર્તા' શબ્દ કે એના મૂળનું કોઈક સ્વરૂપે હાજર હોવું છે. આપણે એ વિવાદ પર પછીથી ચર્ચા કરીશું. આવો, પહેલા યુક્તિ સંગત અને ઐતિહૈસિક સાક્ષ્યોના પ્રકાશમાં એ જાણવાનો પ્રયાસ કરીએ કે ઋષિઓને વેદમન્ત્રોના રચયિતા શા માટે ન માની શકાય? સહુ પહેલા એ દાવાનો વિચાર કરીએ – "પ્રત્યેક વેદમન્ત્રના પોતાના ઋષિ છે- એ વ્યક્તિ કે જેણે એ મન્ત્રની રચના કરી છે"

(આ ધારણાને સમજવા માટે એ જાણવું જરૂરી છે કે મૂળ વેદસંહિતાઓમાં કોઈ ઋષિ આદિના નામનો સમાવેશ નથી. પરંતુ જે ઋષિઓએ સર્વપ્રથમ પોતાની ધ્યાનાવસ્થામાં જે વેદમન્ત્ર કે સૂક્તના અર્થોને જાણ્યા હતા એ ઋષિઓના નામોનો ઉલ્લેખ પરમ્પરાગત રૂપે એ મન્ત્ર કે સૂક્ત પર જોવા મળે છે. કાત્યાયનની સર્વાનુક્રમણી કે સર્વાનુક્રમણિકા એ ઋષિઓના નામોના મૂળ સ્રોત માનવામાં આવ્યા છે. (કેટલીક અન્ય અનુક્રમણિઓ સિવાય) અવૈદિક લોકો એ ઋષિઓને વેદમન્ત્રોના શોધકર્તા માનવાના બદલે રચયિતા માને છે.

પ્રતિવાદઃ

૧ એક સૂક્તના અનેક ઋષિ

a ઇતિહાસમાં એવી કોઈ રચનાનું પ્રમાણ નથી મળતું કે ઘણા બધા લોકોએ સાથે ભેગા મળીને બિલકુલ એક જેવા બનાવ્યા હોય, ભાષા કે વિષયની ભિન્નતા અનિવાર્ય છે. જ્યારે કે વેદોમાં એવા અનેક સૂક્ત છે જેના એક કરતા વધારે ઋષિ છે – બે કે એકસો કે હજાર પણ છે.

ઉદાહરણ તરીકેઃ સર્વાનુક્રમણિકા (વૈદિક ઋષિઓની સૂચિ) માં ઋગ્વેદના એ મન્ત્રોમાં એક કરતા વધારે ઋષિ જોવા મળે છે- ૫.૨, ૭.૧૦૯, ૭.૧૦૨, ૮.૨૯, ૮.૯૪, ૯.૫, ૫.૨૭, ૧.૧૦૦, ૮.૬૭, ૯.૬૬, ૯.૧૬ (આર્ષનુક્રમણી).

ચોવીસ અક્ષરોવાળા ગાયત્રી મન્ત્રના જ એકસો ઋષિ છે! ઋગ્વેદના ૮માં મંડળના ૩૪માં સૂક્તના હજાર ઋષિ છે.

-વધારે આવતા અંકમાં

જિજ્ઞાસુ પાઠકોને સૂચના કે વર્તમાનમાં આર્યજગતમાં ભૂમિગત રીતે અનેકાનેક નવ-યુવકો પોત -પોતાની રીતે ધૂણી-ધખાવીને ઋષિ દયાનન્દના સ્વપ્નોને સાકાર કરવામાં લાગેલા છે. તમે ઇન્ટરનેટ પર જુઓ તો ફેસબુક કે બીજી સાઈટ્સનો ઉપયોગ આ યુવકો છુટથી કરી રહ્યા છે. તેમની ધગશ અને જોશને જોતા લાગે છે કે આર્યસમાજનું ભવિષ્ય નવી પેઢીના હાથમાં સુરક્ષિત છે. જરૂર છે તેઓને પ્રોત્સાહન આપવાની

समाचार दर्पण

टंकारा में ऋषि भक्तों का आगमन

हॉलैण्ड से

पिछले माह हॉलैण्ड से उच्चस्तरीय प्रतिनिधि मंडल ऋषि जन्म भूमि टंकारा पधारे। इस अवसर पर सभी ने सामूहिक रूप से यज्ञ किया एवं अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों के साथ सामूहिक प्रीतिभोज किया। तदुपरान्त आप सभी ऋषि जन्म गृह अवलोकनार्थ पधारे। इस अवसर पर आप सभी के साथ आचार्य रामदेव जी एवं टंकारा ट्रस्ट की ट्रस्टी श्री गुरुदत्त तिवारी जी भी उपस्थित थे।

दिल्ली से

इसी अवसर पर दिल्ली स्थित आर्य समाज सफदरगंज एन्कलेव के प्रधान श्री रवि देव गुप्ता जी सपत्नीक टंकारा पधारे। अपनी किसी निजी कार्य से गुजरात आगमन पर आपने ऋषि जन्मभूमि के आने का कार्यक्रम बनाया। आप एक रात्रि वहाँ ठहरे और गुरुकुल पद्धति की नियमावली अनुसार सपत्नीक एक दिन ठहरे। इसी अवसर पर ट्रस्ट की ओर से भव्य यज्ञशाला में आपका स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया।

टंकारा में निर्माण कार्य प्रगति पर

टंकारा परिसर में निर्माणाधीन अतिथि गृह एवं श्रीमती पुष्पा मुजांल सत्संग हॉल के कार्य प्रगति के चित्र। भूमितल का सिविल कार्य पूर्ण हो चुका है और प्रथम तल पर सत्संग हॉल की छत कार्य भी पूर्ण है। अन्दर का प्लास्टर कार्य भी पूर्ण हो चुका है। वर्तमान में दोनों तलों पर फर्श का कार्य प्रगति पर है। निर्धारित तिथि ऋषि बोधोत्सव से पूर्व सभी कार्य पूर्ण कर लिए जायेंगे। साथ ही गौशाला का विस्तार जिसमें ग्रीष्मकालीन गर्मी में गायों को छाया मिल सके इसका विशेष ध्यान रखा गया है एवं कुछ स्थान जहां ट्रस्ट की भूमि खुली पड़ी थी उसकी चार दीवारी भी की गई।

टंकारा उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा कृषि कार्यो में श्रमदान

आर्य समाज की स्थापना

गांव-पात्रसायेर, जिला-बांकुड़ा, पश्चिम बंगाल में, वैदिक कार्यक्रमों से अनुप्राणित होकर पं. मनोजित दास आर्य महोदय ने 22/11/2012 सायंकाल अपने गृह-प्रांगण में 'आर्य समाज स्थापना' की महती कामना लेकर बृहद्-यज्ञ का अनुष्ठान किया। इसमें ग्रामवासी तथा अन्यान्य बुद्धिजीवी वर्ग बढ़चढ़ कर अपनी भागीदारियां दीं। यज्ञ के ब्रह्मा जी ने आर्य समाज की प्रासंगिकता के ऊपर अधिक जोर दिया। संगीताचार्य पं. अपूर्व देवशर्मा जी ने भजनों के माध्यम से दयानन्द गाथा, ओ३म् महिमा और वैदिक ईश्वरविषयक विचार प्रस्तुत करके जनता का दिल जीत लिया। गुरूकुल वेदरक्षक के आचार्य जी ने शास्त्रोक्त गम्भीर विवेचनों से वैदिक आध्यात्मिकता को उजागर किया और आर्य समाज की तथा वेद-भगवान की रक्षा के लिए सामूहिक शपथ दिलाई। ब्रह्मचारी जयन्त जी ने 'आर्य समाज स्थापना' की उपादेयता व्यक्त की। पं. वासुदेव शास्त्री द्वारा अनुदित "भारत की अवनति के सात कारण", "मूल की भूल", "परा-पूजा", "योगेश्वर श्रीकृष्ण" इत्यादि बंग-भाषा के साहित्यों को बड़ी तादाद में जनता ने क्रय किया। प्रसाद वितरण एवं शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

—वासुदेव शास्त्री, संरक्षक, आर्य समाज, पात्रसायेर, बांकुड़ा, पं. बंगाल

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस/अभिनन्दन

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली के द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं अभिनन्दन समारोह डॉ. जयदेव वेदालंकार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। आचार्य वीरेन्द्र विक्रम के ब्रह्मत्व में यज्ञ प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. योगानन्द शास्त्री उपस्थिति हुए। डॉ. जयदेव वेदालंकार, डॉ. विनय विद्यालंकार एवं श्रीमती प्रेम लता का अभिनन्दन एवं सारगर्भित प्रवचन हुआ और डॉ. महेश वेदालंकार द्वारा संबोधन किया गया जिससे पधारी हुई आर्य जनता भाव विभोर हो गई।

वार्षिकोत्सव/वेद प्रचार

श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम अलीगढ़ का 102वां वार्षिक महोत्सव साधु आश्रम की पावन स्थली पर मनाया गया। जिसमें योग शिविर, वेद सम्मेलन, आर्यवीर सम्मेलन, समाज सुधार सम्मेलन महिला सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन हुये। क्षेत्रीय विधायक दलवीर सिंह ने चौ. चरण सिंह के नाम पर विधायक निधि से आश्रम में व्यवस्था हेतु कुछ व्यय करने की घोषणा की। इस अवसर पर डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया ने कहा- धर्म का रक्षक गुरूकुल है महर्षि दयानन्द ने कहा था कि वेदों की ओर लौटो। संस्कृत का सम्मान वेदों की रक्षा से हो सकता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी, सौम्यानन्द जी, ब्रह्मदेव देव शास्त्री आचार्य ब्रजेश जी ने आध्यात्मिक प्रवचन दिया।

❑❑❑

आर्य समाज, सैक्टर-6, भिलाई का 40 दिवसीय वेद प्रचार अभियान का आयोजन पारिवारिक हवन व सत्संग के रूप में आयोजित किया गया। इसे दो चरणों में आयोजित किया गया।

इस दौरान तीन आयोजन सार्वजनिक स्थलों पर भी आयोजित किए गए। पहला कार्यक्रम केन्द्रीय कारागार, दुर्ग में कैदियों के हृदय परिवर्तन के लिए आयोजित किया गया। दूसरा वृद्धजनों के लिए भिलाई इस्पात संयंत्र द्वारा संचालित सियात सदन, दुर्ग में हुआ और अन्तिम कार्यक्रम आदिवासी क्षेत्रों के छात्रों के छात्रावास, कोहका भिलाई में सपन्न हुआ।

❑❑❑

आर्य समाज राम नगर गुड़गांव द्वारा सप्ताह भर तक विभिन्न खुले स्थानों पर यज्ञ-भजन-प्रवचन के माध्यम से वेद का ज्ञान-जन-जन तक पहुँचाया गया। इस अवसर पर वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने के लिए आर्यजगत् के विद्वान् आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी, डॉ. योगेश, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार तथा युवा संगीतज्ञ आचार्य सतीश 'सत्यम' पधारे हुए थे।

❑❑❑

आर्य समाज सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम, रामघाट मार्ग, अलीगढ़ ने अपना वार्षिक महोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया। वार्षिक महोत्सव का प्रारम्भ गुरुकुल साधु आश्रम के ब्रह्मचारियों की एक टोली के द्वारा जनजागरण हेतु प्रभात फेरी से हुआ। प्रति दिन योग शिविर डॉ. उपेन्द्र आर्य, डॉ. के.पी. आर्य, योग शिक्षकों के द्वारा दर्जनों योग प्रेमी महानुभावों के बीच विधिवत चला। वैदिक यज्ञ पंडित राजपाल शास्त्री व पं. सुरेन्द्र शास्त्री आर्य पुरोहित के ब्रह्मत्त्व में हुआ। भक्त संगीत विजनौर से पधारे, भजनोपदेशक श्री कुलदीप विद्यार्थी की प्रस्तुती प्रशंसनीय रही एवं वेद प्रवचन महोपदेशक डॉ. रूपचन्द्र दीपक लखनऊ के सारगर्भित उपदेश जनता को आकर्षित करते रहे।

वार्षिकोत्सव का निमन्त्रण

आर्य समाज खेड़ाअफगान (सहारनपुर) में वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया जायेगा। उत्सव में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्रीमान देवेन्द्र पाल वर्मा आर्य, आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी, आचार्य रणवीर शास्त्री नकुड़, श्री ओम प्रकाश वर्मा आर्य भजनोपदेशक यमुना नगर, श्री प्रताप सिंह आर्य भजनोपदेशक सहारनपुर आदि वैदिक विद्वान पधार रहे हैं। 17 फरवरी को वैदिक संस्कृति ज्ञानवर्धिनि प्रतियोगिता का परिणाम एवं पारितोषिक वितरण किया जायेगा।

आर्य साहित्य पुरस्कार योजना

आर्य समाज में अनुसंधान, लेखन और प्रकाशन की परम्परा को प्रगति देने के उद्देश्य से गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.) बोहल ने स्मृति शेष चौधरी गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्मृति शेष श्रीमती गिना देवी की पावन स्मृति में दो साहित्य पुरस्कार प्रारम्भ किये गये हैं। ये साहित्य पुरस्कार प्रतिवर्ष दिये जाते हैं।- इन पुरस्कारों के लिए देश-विदेश के सभी आर्य साहित्यकार/सम्पादक अपनी-अपनी प्रविष्टियां भेज सकते हैं। स्वर्गीय साहित्यकार की प्रकाशित कृति को उसके पुत्र-पुत्री, पति-पत्नी भी भेज सकते हैं। सोसायटी/निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम होगा।

जनवरी 2000 और दिसम्बर 2012 के मध्य प्रकाशित मौलिक रचना गद्य या पद्य की तीन-तीन प्रतियां भेजें। साथ ही रचयिता का अद्यतन व्यक्ति वृत्त तथा दो चित्र भेजना अनिवार्य है। एक आर्य साहित्यकार/सम्पादक कितनी भी रचनायें भेज सकता है।

प्रत्येक पुरस्कार के तहत ग्यारह सौ रूपये का नकद या चैक व प्रशस्ति पत्र सोसायटी की ओर से दिया जायेगा। एक आर्य साहित्यकार/सम्पपदक को उसकी एक से अधिक पुस्तकों पर भी पुरस्कार दिया जा सकता है। पुरस्कार हेतु प्राप्त पुस्तकें लौटायी नहीं जायेंगी। अधिक जानकारी के लिए हमारी बेबसाईट www.grngo.co.org & guganramsihagprize.blogspot.com लॉग ऑन करें।

प्रविष्टियां प्राप्त होने की अंतिम तिथि 31 जनवरी 2013 है।

पुस्तक का विमोचन

दिल्ली अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2012 के मुख्य मंच से **प्रख्यात वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्र शेखर शास्त्री जी के ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश का संदेश' का विमोचन** सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी एवं गुरूकुल खानपुर के आचार्य श्री प्रद्युम्न जी ने समवेत रूप से किया। प्रख्यात साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया के शब्दों में, 'प्रस्तुत ग्रंथ सर्वबोधगम्य, रोचक एवं ज्ञानवर्धक बन पड़ा है। आशा है, सरल-सुबोध शैली में लिखित इस ग्रंथ से सामान्य पाठकों का बहुत भला होगा।' अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त युवा वैदिक विद्वान आ. चन्द्रशेखर शास्त्री जी द्वारा प्रणीत एवं स्व. श्रीमती शांति देवी जी की पुण्य स्मृति में निःशुल्क वितरित 'सत्यार्थ प्रकाश का संदेश' शीर्षक ग्रंथ में महर्षि के 'सत्यार्थ प्रकाश' का निचौड़ है।

'आस्थाएँ' पुस्तक का विमोचन

नरेन्द्र आहूजा विवेक की पुस्तक आस्थाएँ का विमोचन आर्यजगत् के युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा आर्य समाज सैक्टर-28 फरीदाबाद में किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के मन्त्री श्री सत्यप्रकाश भारद्वाज, तथा आचार्य शिवकुमार ने पुस्तक के बारे में अपने अपने विचार रखे। विमोचन से पूर्व नरेन्द्र आहूजा विवेक ने पुस्तक में से जीवन यात्रा पर अपने विचार प्रगट किए। स्वामी श्रद्धानन्द ने बताया कि आर्ष लेखों का संग्रह आस्थाएं नरेन्द्र आहूजा विवेक की बारहवीं पुस्तक है। एक दर्जन पुस्तकों के रचयिता सहायक राज्य औषधि नियंत्रक तथा हरियाणा साहित्य अकादमी के सदस्य नरेन्द्र आहूजा विवेक ने इस पुस्तक में वैदिक आर्य मान्यताओं पर आधारित लेखों में पाखंडों, अंधविश्वासों पर कड़ा प्रहार किया है।

(पृष्ठ 1 का शेष)

दबते हैं और जीवन में सत्त्वगुण की प्रधानता जगती है। जितना परिवर्तन सत्संग कर सकता है, उतना बड़ा परिवर्तन दुनिया की कोई शक्ति नहीं कर सकती। काम-धन्धे करते-करते मन, बुद्धि, विचारों और व्यवहार आदि में दोष व गन्दगी आ जाती है। इनको पवित्र और स्वस्थ बनाये रखने के लिये सत्संग संजीवनी बूटी का काम करता है। दुनियावी लोगों को समय निकालकर सत्संग में जरूर जाना चाहिये; उन्हें सत्संग में शान्ति व सान्त्वना मिलेगी। सत्संग से धर्म-बुद्धि जागृत होती है। भावशुद्धि तथा हृदय-परिवर्तन के लिए सत्संग अचूक दवाई है।

हम देखते हैं कि शरीर से रोज पसीना निकलता, दाँतों पर मैल जमता, सामान पर तथा कमरों में रोज धूल जम जाती है। यदि इन्हें नित्य साफ न किया जाए तो गन्दगी का कोई ठिकाना न रहे। इसी प्रकार मल-मूत्र की सफाई न की जाए तो घर दुर्गन्ध व गन्दगी का ढेर बन जाए। ऐसे ही सत्संग, स्वाध्याय, आत्मचिन्तन, भक्ति, प्रार्थना आदि के बिना मन दुर्गन्ध का कूड़ादान बन जाता है। सत्संग से मन में पाप करने के प्रति भय जागृत होता और मनुष्य सुधरता है। सत्संग से आत्मा बुराई, पाप व अधर्म को समझने लगता है। सत्संग मनुष्य के जीवन में सफाई करता है। जैसे मैल साफ होने पर वस्त्र हल्का, स्वच्छ व आकर्षक हो जाता है, वैसे ही सत्संग से मनुष्य के जीवन में उच्चता, सुन्दरता, आकर्षण और पवित्रता आ जाती है। वैसे ही सत्संग से मनुष्य के जीवन में उच्चता, सुन्दरता, आकर्षण और पवित्रता आ जाती है। कथा, प्रवचन एवं सत्संग की सार्थकता व सफलता इसी में है कि सुनकर हमारे मन, विचारों, बुद्धि और व्यवहार में सुधार व बदलाव आये। यदि कथा सुनने के बाद भी पाप न छूटे, ज्ञान-वैराग्य न उत्पन्न हुआ, तो कथा सुनना सिर्फ धार्मिक मनोरंजन के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

कोई सत्संग में पड़ोसी के कहने पर, कोई पत्नी को साथ देने के लिए, कोई टाइम पास करने के लिए, कोई संसार को धोखा देने के लिये और कोई अपने को धार्मिक होने का भ्रम पूरा करने के लिए सत्संग करते व मन्दिर में आते हैं। कोई विरला ही व्यक्ति होता है, जो आत्मज्ञान, आत्मसुधार, आत्मकल्याण तथा प्रभुभक्ति के लिये सत्संग में जाता है। सच्चा सत्संग तो आन्तरिक होता है। सत्संग से आचार-विचार, खानपान, रहनसहन, जीवनचर्या आदि सुधरते हैं और सांसारिक मायावी प्रपंच छूटता व हल्का होता है।

जब अवसर मिलता है, तब हम सत्संग नहीं करते हैं। क्या पता फिर समय मिले या न मिले और शरीर साथ दे या न दे। अधिकांश लोगों की शिकायत रहती है कि सत्संग के लिये समय नहीं मिलता है। समय की सबको शिकायत है। बहुत से व्यक्ति सिनेमा, टेलीविजन, ताश, गप्पों तथा इधर-उधर की बातों के लिये समय निकाल लेते हैं, परन्तु सत्संग के लिये उनके पास समय नहीं होता। वस्तुतः, ऐसे लोगों में सत्संग की भूख, रुचि, इच्छा तथा प्रवृत्ति जागृत नहीं होती है। हमें नित्य विचार करना चाहिये कि आज का कीमती दिन निकल गया। यह महत्त्वपूर्ण दिन जीवन में फिर कभी वापिस नहीं आएगा। ऐसे ही जीवन धीरे-धीरे निकला जा रहा है। जिस उद्देश्य के लिये प्रभु ने संसार में भेजा था, उस जीवनोद्देश्य की ओर हम कभी ध्यान ही नहीं दे पाते हैं।

शरीर का सत्य आत्मा और संसार का सत्य परमात्मा है। जो इनकी प्राप्ति करा दे, जहाँ प्रभु का गुण-कीर्तन, प्रार्थना, उपासना आदि हों, जहाँ पाप, अधर्म से छूटने का भाव जागृत हो, जहाँ हमारे हृदय में दैवी भाव जागृत हों, वहीं सच्चा सत्संग है। आम आदमी यदि सत्संग में पहुँच जाए, तो भी आत्मा और परमात्मा के सत्यस्वरूप एवं प्राप्ति की कामना उसमें जागृत नहीं होती। आश्चर्य होता है कि सत्संग में बैठा व्यक्ति बड़े ध्यान से सुनता है कि चोरी करना, झूठ बोलना तथा धोखा देना पाप है, परन्तु वही व्यक्ति सत्संग से उठकर पाप, अधर्म, झूठ और बेईमानी करना आरम्भ कर देता है। यह कैसा सत्संग है? यह तो गजस्नान वाली बात हो गई। हाथी नदी में स्नान करता है, शरीर का मैल साफ करने के बाद बाहर निकलता है, फिर शरीर पर धूल-मिट्टी व कीचड़ डाल लेता है। ऐसे ही सामान्य मनुष्य सत्संग, कथा, तीर्थयात्रा आदि करने के बाद फिर पाप, अधर्म और बुरे कामों में फँस जाता है। इसी कारण मनुष्य का सुधार नहीं हो पा रहा है।

मानव की भोगों में जितनी आसक्ति होती है, उतनी ही बुद्धि में जड़ता आती है। इसीलिए सत्संग की बातें याद नहीं रहती हैं और समझ में भी नहीं आती हैं। भौतिक बातों से सत्संग का ज्ञान ढक जाता है। दिनरात भोग और संग्रह में लगे व्यक्ति परमात्मा तक नहीं पहुँच पाते हैं। जो व्यक्ति अधर्म कर रहा है और कहता है कि मैंने नहीं किया है, जो झूठ बोलता है, परन्तु अपने को सच्चा साबित करता है, वह कभी सुधर नहीं सकता है। जो पापों को बार-बार करता है, रुकता नहीं है, जिसे पापबोध, अपराधबोध तथा आत्मग्लानि नहीं होती, ऐसे आदमी का सुधार सम्भव नहीं होता। जो अज्ञान में फँसा है, शरीर को ही सब कुछ समझता है, हर समय विषयभोगों की लालसा तथा चिन्तन में रहता है, ऐसे मनुष्य से परमात्मा दूर रहता है। सत्संग रोगी मन की औषधी है। अन्दर की बीमारियों का सत्संग से बढ़कर दुनिया में अन्य कोई इलाज नहीं है।

जब व्यक्ति घर से सत्संग में आता है, तब उसकी चिन्तनधारा कुछ और होती है। सत्संग में बैठने व सुनने से भावधारा में परिवर्तन आता है। जाते समय बहुत कुछ बदलता हुआ होता है। सत्संग से विवेक आता है, विवेक से तत्त्वज्ञान होता है। तत्त्वज्ञान से दोष, बुराइयाँ, विकार, वासनाएँ, चिन्ताएँ आदि छूटते हैं। मन प्रभुभक्ति की ओर बढ़ने लगता है। सत्संग में जाने के बाद काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि जितनी तेजी से आते थे, उतनी तेजी से सत्संगी बनने के बाद नहीं आते हैं। जिसका मन सत्संग, कथा, भक्ति, प्रार्थना आदि में नहीं लगता है, समझो कि उस पर प्रभु की कृपा नहीं हुई है। प्रभुकृपा से मनुष्य के जीवन का अज्ञान दूर होता है। संत तुलसीदास कहते हैं-

बिनु सत्संग विवेक न होई।
ईश-कृपा बिन सुलभ न सोई॥

सत्संग आत्मबोध जागृत करता है। इससे सोच तथा विचारधारा बदलती है। इससे पाप दूर होते हैं और मन में शान्ति आती है। मन के रोगों की दवा सत्संग के पास है। सांसारिक पाप, अपराध व बुराई से छुड़ाने के लिये पुलिस, कचहरी और न्यायाधीश होते हैं। मानसिक पाप, अपराध, काम, क्रोध, लोभ आदि वासनाओं को छुड़ाने के लिये सत्संग होता है। जैसे सिनेमा, नाच, गाना आदि बातों में मन प्रवृत्त होने लगता है, ऐसे ही सत्संग से अच्छे विचारों, कथा, प्रवचन, भजन आदि में भी मन धीरे-धीरे प्रवृत्त होने लगता है। पहले तन से सत्संग में आने की जरूरत है। इसीलिये सत्संग जीवन-निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। सत्संग, स्वाध्याय, पूजा, प्रार्थना आदि अन्दर के खालीपन को भरते हैं। जो अच्छे विचारों से अन्दर के खालीपन को भर लेता है, वही सुखी, प्रसन्न शान्त, सन्तुष्ट व आनन्दित हो जाता है। प्रतिदिन सत्संग करने से मनुष्य पाप, अधर्म एवं बुराइयों से बचा रहता है। वस्तुतः सत्संग पूर्वजन्म के पुण्यों के फलस्वरूप प्राप्त होता है। जीवन-उद्देश्य की पूर्ति में सत्संग की महत्वपूर्ण भूमिका है।

प्रस्तुति: श्रीमती प्रेम चौधरी

स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती स्मृति सम्मान

<u>आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्वावधान में</u> स्व. स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती जी स्मृति में ऐसे संन्यासीवृन्द जिनका अपना कोई मठ नहीं है, भारत भर में भ्रमण कर आर्यसमाज और वेद का प्रचार करते हैं, को ऋषि जन्मभूमि टंकारा में आयोजित होने वाले ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर 10 मार्च 2013 को 15000/-रुपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा।

आदरणीय संन्यासीवृन्दों से प्रार्थना है कि वे अपने द्वारा किये गये वेद प्रचार कार्यों का विवरण देते हुए **आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा आर्यसमाज माटुंगा, मुम्बई** के पते पर सूचित करने की कृपा करें। प्रतिनिधि सभा द्वारा लिया गया निर्णय सर्वमान्य होगा। यह सम्मान प्रतिवर्ष इसी अवसर पर टंकारा में दिया जाता है। **- मन्त्री, अरूण अबरोल**

वानप्रस्थ एवं संन्यास दीक्षा टंकारा में

इच्छुक आर्य जन जो वानप्रस्थ एवं सन्यास की दीक्षा लेना चाहें उनका ऋषि जन्म स्थान टंकारा में आयोजित होने वाले ऋषि बोधोत्सव पर स्वागत है दीक्षा लेने की पूर्व सूचना आचार्य रामदेव जी को दूरभाष : 02822.287756 मो. : 09913251448 पर देवें।

डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया सम्मानित

दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर राव हरिशचन्द्र आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट नागपुर(बीगोपुर) द्वारा प्रख्यात वैदिक विद्वान **<u>डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को 'आर्य विभूषण पुरस्कार' से सम्मानित</u>** किया गया। उन्हें यह पुरस्कार हरियाणा सरकार के मुख्यमन्त्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा जी ने प्रदान किया। सम्मान रूप में उन्हें 21 हजार रूपये की धनराशि, कलात्मक स्मृति चिन्ह, अभिनन्दन पत्र, शाल पगड़ी एवं श्रीफल प्रदान किए गए। इस अवसर पर उनके त्याग तपस्यामय पवित्र सामाजिक जीवन की प्रशंसा की गई।

ऋषि निर्वाण उत्सव सम्पन्न

<u>आर्य केन्द्रीय सभा पानीपत</u> के तत्वावधान में महर्षि स्वामी दयानन्द जी का निर्वाण दिवस आर्य समाज, मॉडल टाऊन में मनाया गया। प्रो. ओमकुमार जी आर्य ने कहा यदि हम अपने जीवन का उत्थान चाहते हैं तो हमें वेद मार्ग पर चलना चाहिए। मुख्य अतिथि श्री सुरेश मित्तल प्रादेशिक सचिव ईनेलो हरियाणा ने कहा कि आर्य संस्था सर्वश्रेष्ठ संस्था है। समारोह की अध्यक्षता श्री ओ.पी. डावर ने की। ध्वजारोहण श्री सुरेश मलिक जी, प्रधान आर्य समाज हुड्डा जी के कर-कमलों द्वारा किया गया। सभी आर्य स्कूलों के बच्चों ने भाषण प्रतियोगिता में भाग लिया।

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

ऋषि जन्मभूमि टंकारा (गुजरात) चलो

इस अवसर पर ऋषि भक्तो को धार्मिक, ऐतिहासिक एवं पर्वतीय स्थानों की यात्रा कराई जायेगी।

(6 मार्च से 16 मार्च 2013 तक)

दर्शनीय स्थान : अजमेर, पुष्करराज, जोधपुर, माउन्टआबु, उदयपुर, जयपुर तथा चित्तौडगढ़, हल्दी घाटी

गुजरात : टंकारा, द्वारिका, बेट द्वारिका, पौरबन्दर, सोमनाथ मन्दिर, राजकोट, अक्षरधाम मन्दिर आदि

किराया बस प्रति सवारी : रुपये 3200/-

कार्यक्रम

प्रस्थान:- ❐ 6.3.2013 रात्रि 9.00 बजे आर्यवीर नेत्र चिकित्सालय गुड़गांव से 7.3.2013 को प्रात 6.00 बजे अजमेर से पुष्करराज, ❐ 7.03.2013 प्रात: 9.00 बजे अजमेर से चलकर दोपहर 3.00 बजे जोधपुर, रात्रि जोधपुर ❐ 8.3.2013 प्रात: 10.00 बजे जोधपुर से चलकर सायं 4.00 बजे माऊन्टआबू, रात्रि माऊन्टआबू ❐ 9.3.2013 प्रात: 6.00 बजे माऊन्टआबु से चलकर दोपहर 3.00 बजे टंकारा।

9 व 10 मार्च टंकारा में

❐ 11.03.2013 प्रात: 5.00 बजे टंकारा से चलकर द्वारिका, बेट द्वारिका देखकर रात्रि पोरबन्दर। ❐ 12.03.2013 प्रात: 11.00 बजे पोरबन्दर से सोमनाथ मन्दिर, रात्रि राजकोट ❐ 13.03.2013 प्रात: 6.00 बजे राजकोट से गांधी नगर, अक्षरधाम देखकर रात्रि उदयपुर ❐ 14.03.2013 दोपहर 12.00 बजे उदयपुर से हल्दीघाटी देखकर, रात्रि चित्तौडगढ़ ❐ 15.03.2013 प्रात: 8.00 बजे चित्तौडगढ़ से रात्रि जयपुर ❐ 16.03.2013 सायं जयपुर से चलकर रात्रि गुड़गांव।

विशेष : सीट बुक कराने से पहले कार्यक्रम ध्यान से पढ़ लें। 1. मौसम के अनुसार बिस्तर, पानी की बोतल एवं टार्च आदि साथ लायें। 2. शीध्र अति शीध्र अपनी सीट बुक करवालें। आधी सवारी को सीट नहीं मिलेगी। राशि जमा होने के बाद वापिस नहीं होगी। कार्यक्रम में परिवर्तन करने एवं सीट नम्बर देने का अधिकार प्रबन्धक को होगा। यात्री समय का विशेष ध्यान रखें।

नोट : निवास एवं भोजन की व्यवस्था आर्य समाजों में होगी, यदि कही ऐसा नहीं हुआ तो यात्री अपने व्यय से करेगें।

<u>यात्रा प्रबन्धक</u> **मा. सोमनाथ,** 363-364, प्रताप नगर, गुड़गांव, मो. 9811762364, फोन : 0124-2304873, 08800115646

(Cont. From Page 2)

MISSION OF THE UNIVERSITY: To nurture employable professionals by equipping them with desired skills. ❑ To provide accessible, affordable and acceptable education. ❑ The University will aim at creating new knowledge systems by privileging inter-disciplinary approach. ❑ To provide an academically ambient environment for its stakeholders to develop as technologically superior, socially conscious & nationally responsible citizens. ❑ The University will have International Collaborations not only with top-notch Universities of the world but with top rated research group as well. ❑ To ensure regular up-graduation of knowledge and skills of stakeholders to keep pace with fast changing technology. ❑ To acquire national & international accreditation. ❑ <u>Fusion of learning with Universal spirit of ethics & Vedic preaching.</u>

Administrative Block

Academic Block

UNIQUENESS OF DAV UNIVERSITY:

It will offer futuristic programmes of study; ❑ It will offer regular modular courses by the faculty drawn from abroad for its super specialization courses; ❑ It will promote multi-disciplinary work across its school/instittutions and centres; ❑ It will provide for Computer and IT use as an integral part of all its programmes; ❑ It will carry out curriculum design in participation with the representatives drawn from industry and top international academia.

Hostels

LOCATION OF THE UNIVERSITY: The University is located at Jalandhar (Punjab) on Jalandhar-Srinagar National Highway (NH-44) measuring about 72 acres just one KM from the Jalandhar Municipal Corporation boundary.

Research Centre & Auditorium

चरक संहिता से

दूध के साथ आम, केला, बेर, नारियल का प्रयोग ना करें।
शहद और घी समान मात्रा में मिला कर ना खाएँ।
शहद को कभी भी गर्म करके प्रयोग ना करें।
शरद, बसन्त व ग्रीष्म ऋतु में दही का प्रयोग ना करें।
रात को कभी भी दही का सेवन न करें।

टंकारा समाचार जनवरी, 2013
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14
Posted at Patrika Channel R.M.S. on 1/2-01-2013
R.N.I. No 68339/98

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला राजकोट-363650 (गुजरात) दूरभाष : (02822) 287756

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 09, 10, 11 मार्च 2013 (शनिवार, रविवार, सोमवार) को महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ : दिनांक 9 मार्च 2013 से 11 मार्च 2013 तक

ब्रह्मा : आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत : श्री सत्यपाल पथिक/ संगीताचार्य: श्री कुलदीप आर्य (सपत्नीक)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष : श्री बृज मोहन मुंजाल (प्रमुख हीरो ग्रुप इण्डस्ट्रीज)

मुख्य अतिथि : श्री पूनम सूरी

(प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट)

बोधोत्सव

दिनांक 10.03.2013 रविवार

कार्यक्रम के सम्भावित आमन्त्रित विद्वान्: **स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती** (सीकर), **स्वामी रामानन्द** (शिमला), **स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती** (माउंट आबू), **डॉ. एम. जगन्नाथ** (सासंद), **श्री नवीन चावला** (सदस्य, राज्यसभा मनोनीत), **श्री कुंवरजी भाई बावलिया** (स्थानीय सांसद), **बल्लभभाई कथीरिया** (राजकोट) अध्यक्ष गौ सेवा सदन गुजरात, **श्री मोहन भाई कुण्डारिया** (गुजरात राज्य मन्त्री), **श्री कान्ति भाई अमरतिया** (विधायक, मोरवी), **श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल** (अहमदाबाद), **श्री विनोद शर्मा** (यू.एस.ए.), **श्री गिरीश खोसला** (यू.एस.ए.), **श्री वाचोनिधि आर्य** (गांधीधाम), **एवं इनके अतिरिक्त देश-विदेश से अनेकों विद्वान एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।**

दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में चल रहे कार्यों के लिये एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/क्रास चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा ''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'' के नाम दिल्ली कार्यालय आर्यसमाज ''अनारकली'' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 अथवा टंकारा, जिला राजकोट-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा कर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल	शिवराजवती आर्या	रामनाथ सहगल
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	(उप-प्रधाना)	मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक-रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 दूरभाष : 41548504 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय